तिरुमल तिरुपति देवस्थान

सप्तगिरि

सचित्र मासिक पत्रिका

मई 2021.... दाम रु.5/-

तिरुपति

श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२०२१ मई १८ से २६ तक

तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी का ब्रह्मोत्सव

२०२१ मई १८ से २६ तक

१८-०५-२०२१ मंगलवार

दिन : ध्वजारोहण - रात : महाशेषवाहन

१९-०५-२०२१ बुधवार

दिन : लघुशेषवाहन - रात : हंसवाहन

२०-०५-२०२१ गुरुवार

दिन : सिंहवाहन - रात : मोतीवितानवाहन

२१-०५-२०२१ शुक्रवार

दिन : कल्पवृक्षवाहन - रात : सर्वभूपालवाहन

२२-०५-२०२१ शनिवार

दिन : पालकी में मोहिनी अवतारोत्सव - रात : गरुडवाहन

२३-०५-२०२१ रविवार

दिन : हनुमन्तवाहन - रात : गजवाहन

२४-०५-२०२१ सोमवार

दिन : सूर्यप्रभावाहन - रात : चंद्रप्रभावाहन

२५-०५-२०२१ मंगलवार

दिन : रथ-यात्रा - रात : अश्ववाहन

२६-०५-२०२१ बुधवार

दिन : चक्रस्नान - रात : ध्वजावरोहण

तस्मात्त्वमिन्द्रियाण्यादौ नियम्य भरतर्षभ।
पाप्मानं प्रजहि ह्येनं ज्ञानविज्ञाननाशनम्॥
(- श्रीमद्भगवद्गीता १-४१)

इसलिए हे अर्जुन! तू पहले इन्द्रियों को वश में करके इस ज्ञान और विज्ञान का नाश करनेवाले महान् पापी काम को अवश्य ही बलपूर्वक मार डाल।

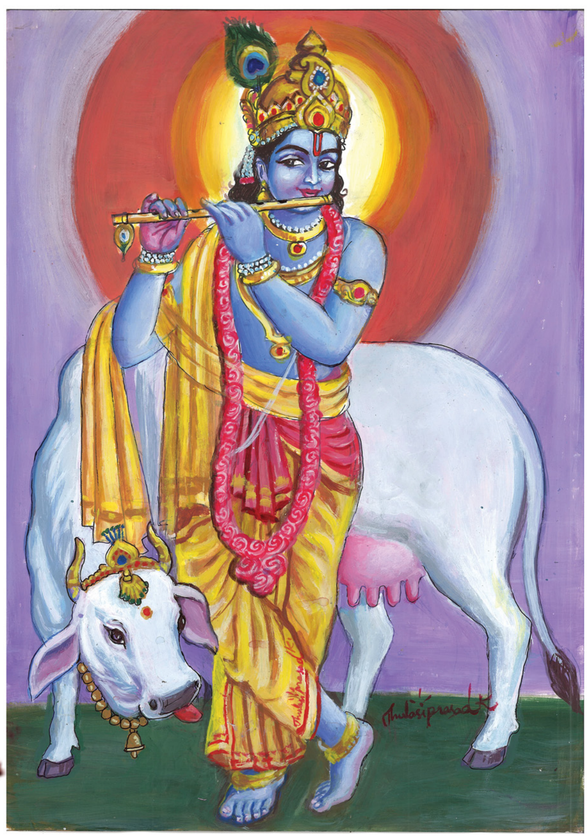

देवकी नन्दनः कृष्णो गीता पाठने तुष्यति।
यथा न वेदैर्दानेन यज्ञ तीर्थ व्रतादिभिः॥
(- गीता मकरंद, गीता की प्रशस्ति)

देवकी नंदन श्री कृष्ण भगवान गीता के पठन से जो संतोष प्राप्त करते हैं, वह संतोष वेदों, दानों, यज्ञों एवं तीर्थ व्रतादि से प्राप्त नहीं कर पाते।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास

"मानव सेवा ही माधव सेवा है" - इसी लक्ष्य के साथ, ति.ति.दे. विविध हितकर कार्यों का निर्वहण समाज के लिए कर रही है। इस क्रम में ति.ति.दे. ने १९४३ वर्ष में अनाथ बाल बच्चों के संरक्षणार्थ 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर (तिरुपति) न्यास' की स्थापना की। आजकल 'श्री वेंकटेश्वर बालमंदिर न्यास', श्री वेंकटेश्वर जलनिधि योजना, कल्याणमस्तु न्यास, श्री वेंकटेश्वर समाचार सांकेतिक न्यास आदि को अपने में मिलाकर 'श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास' के रूप में परिणत हुआ है।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लक्ष्य

01) अनाथ बाल बालिकाओं, वृद्ध, निराश्रित, अभागे, निर्धन एवं निर्बलवर्ग के व्यक्तियों की अभिवृद्धि, रक्षा, उनके कुशल क्षेम के लिए धर्मशालाओं एवं आवास प्रदत्त करना। अनाथ एवं निर्धन विद्यार्थी-विद्यार्थियों को आर्थिक रूप से सशक्त करना।

02) दिव्यांगों एवं मनोरोगियों के लिए आवश्यक चिकित्सा की सुविधाओं की व्यवस्था करना एवं उनके जीवन शैली को सुधारना। इस प्रक्रिया में किसी वर्ग एवं वर्ण भेद को त्यागकर सभी लोगों को एक ही स्तर में स्वीकार करना।

03) बाढ़, अकाल जैसी प्रकृतिक विपत्ति के संभवित समय में, अग्निफैलान जैसी अवांछनीय विपत्ति के उठने पर, तक्षण उनकी सहायता के लिए तैयार रहना।

04) जो बच्चे बहरे या मूक होते हैं, उनकी उन्नति के लिए पुनर्वास केन्द्रों की व्यवस्था करना।

05) उपर्युक्त लोप से त्रस्त ग्रामीण बाल बच्चों के लिए आवश्यक उपकरणों का वितरण करने के साथ-साथ उनको शिक्षा प्रदान करना।

06) समाज में पीने के पानी, जो अत्यधिक आवश्यक पेय पदार्थ है, उसको उपलब्ध कराना, तिरुमल पंचायती तथा तिरुपति नगर पालिका के लिए आवश्यक जल संसाधन की पूर्ति के लिए पुल एवं तालाबों का निर्माण करना। पानी के मितव्यय के लिए आवश्यक कार्यवाही करना।

07) पाठ्य पुस्तकों के साथ, इंटरनेट (अंतर्जाल) जैसी आधुनिक, सांकेतिक सुविधाओं को उपलब्ध कराकर, उसके द्वारा हमारे देश का इतिहास, सांस्कृतिक दाय प्राप्त संपदा को भावी पीढियों तक पहुँचाना।

08) समाज में शिष्टाचार तथा नैतिक मूल्यों के विकास के लिए युवा पीढ़ी में आत्मविश्वास को बढाना।

09) विवाह संपन्न कराने के द्वारा हितैषी के रूप में वधू-वर को आत्मविश्वास तथा गौरव के साथ जीवनयापन करने के लिए योग्य बनाना।

10) जो व्यक्ति उपर्युक्त कार्यक्रमों में कार्यरत हैं, उन व्यक्तियों तथा संस्थाओं की मदद करना। जो भी कार्य चालू हैं उनको बिना किसी लाभ की अपेक्षा किये, लक्ष्यसिद्धि को प्राप्त करना।

श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास के लिए इस रूप में चंदा भेजिए...

01) इस योजना के लिए कम से कम रु.१,०००/- भेजें।

02) अगर, चंदा रु.१०००/- से कम हो, तब उसे श्रीवारि हुण्डी के खाते में जमा किया जाता है और चंदादार को इसके बारे में कोई सूचना नहीं दी जाती है। सभी चंदादारों की चंदा किसी राष्ट्रीय बैंक में जमा की जाती हैं और उस पर जो सूद मिलता है, उसे उक्त योजनाओं के लिए खर्च किये जाते हैं। आप, अपनी चंदा को किसी राष्ट्रीय बैंक से, चेक या डिमांड ड्राफ्ट के द्वारा 'श्री कार्यनिर्वहणाधिकारी, श्री वेंकटेश्वर सर्वश्रेयस् न्यास, ति.ति.दे., तिरुपति' के नाम पर लेकर, 'प्रधान गणांकाधिकारी (चीफ़ अकौण्ट्स आफ़ीसर), ति.ति.दे., तिरुपति - ५१७ ५०७' के नाम पर भेज सकते हैं।

अन्य विवरण के लिए दूरभाष - ०८७७-२२६४२५८ को संपर्क करें।

सप्तगिरि

तिरुमल तिरुपति देवस्थान की सचित्र मासिक पत्रिका

वेङ्कटाद्रिसमं स्थानं ब्रह्माण्डे नास्ति किञ्चन।
वेङ्कटेश समो देवो न भूतो न भविष्यति॥

वर्ष-५१ मई-२०२१ अंक-१२

विषयसूची

अन्नमाचार्य जयंती	डॉ.जी.सुजाता	07
श्रीमद्भगवद्गीता	श्री राजीव रतन	10
अक्षयतृतीया	श्री सी.सुधाकर रेड्डी	12
महा भक्तिन एवं कवयित्रि मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा	डॉ.आर.गायत्री	16
श्री नरसिंह जयंती	डॉ.पी.बालाजी	20
भगवान लक्ष्मी नरसिंह मंदिर, कदिरी	डॉ.हेच.एन.गौरीराव	22
श्री वेंकटेश सुप्रभात	श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी	31
श्री प्रपन्नामृतम्	श्री रघुनाथदास रान्दड	34
हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश	डॉ.एम.आर.राजेश्वरी	36
शरणागति मीमांसा	श्री कमलकिशोर हि. तापडिया	38
श्री रामानुज नूट्रन्दादि	श्री श्रीराम मालपाणी	40
तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर (तिरुपति बालाजी)	प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव, प्रो.गोपाल शर्मा	41
आयुर्वेद के अनुसार दिनचर्या	डॉ.सुमा एस.एस.जोशी	44
मंगलाशासन पाशुरम	श्री के.रामनाथन	46
आइये, संस्कृत सीखेंगे...!!	डॉ.सी.आदिलक्ष्मी	49
बालनीति- स्वास्थ्य का रहस्य	श्रीमती सी.मंजुला	50
चित्रकथा- सार्थक जीवन होना हो तो	डॉ.एम.रजनी	52
क्विज	डॉ.दिव्या.एन	54

website: www.tirumala.org or www.tirupati.org वेबसैट के द्वारा सप्तगिरि पढ़ने की सुविधा पाठकों को दी जाती है। सूचना, सुझाव, शिकायतों के लिए - sapthagiri_helpdesk@tirumala.org

मुखचित्र - तिरुपति श्री गोविंदराजस्वामीजी (उत्सव मूर्ति)
चौथा कवर पृष्ठ - विनरो भाग्यमु विष्णु कथा...!!

गौरव संपादक
डॉ.के.एस.जवहर रेड्डी, आई.ए.एस.,
कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति.ति.दे.

प्रधान संपादक
आचार्य के.राजगोपालन्

संपादक
डॉ.वी.जी.चोक्कलिंगम्

मुद्रक
श्री पी.रामराजु
विशेष अधिकारी,
(प्रचुरण व मुद्रणालय),
ति.ति.दे. मुद्रणालय, तिरुपति।

स्थिरचित्र
श्री पी.एन.शेखर, छायाचित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।
श्री बी.वेंकटरमण, सहायक चित्रकार, ति.ति.दे., तिरुपति।

जीवन चंदा .. रु.500-00
वार्षिक चंदा .. रु.60-00
एक प्रति .. रु.05-00
विदेशी वार्षिक चंदा .. रु.850-00

अन्य विवरण के लिएः
CHIEF EDITOR, SAPTHAGIRI, TIRUPATI - 517 507.
Ph.0877-2264543, 2264359, Editor - 2264360.

सूचना
मुद्रित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखक के हैं। उनके लिए हम जिम्मेदार नहीं हैं।
- प्रधान संपादक

कोरोना महम्मारी

कोरोना वायरस महम्मारी २०१९-२० की शुरूआत एक नए किस्म के कोरोना वायरस के संक्रमण के रूप में मध्य चीन के वुहान शहर में २०१९ के मध्य दिसंबर में हुई बहुत से लोगों का बिना किसी कारण निमोनिया होने लगा। विश्वस्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस को नया नाम दिया - कोविड-१९, करोना वायरस २०१९ के आखिर में अनजान कारणों से निमोनिया जैसी बीमारी सा सामने आयी। इस बीमारी का कारण सीवियर एक्यूट रेस्परेटरी सिंड्रोम।

भारत में कोरोना का आरंभ - जमात घटना

मार्च के प्रारंभ में दिल्ली के निजामूद्दीन मरकाज मस्जिद में होनेवाला तबलीगी जमात नामक मजहब जन समूह करोनावायरस के एक तीव्र प्रसारक घटना के रूप में सामने आया, देश भर में इस घटना से जुडे कम से कम १० लोगों की मौत हो गयी। ९,००० से अधिक मजहबी प्रचारकों ने जनसमूह में भाग लिया। जिन में से अधिकांश भारत के विभिन्न राज्यों से थे तथा ४० अन्य देशों से ९६० लोग उपस्थित थे तब लोग जमात के सदस्यों और देश भर में उनके संपर्को सहित कुल २२,००० लोगों को क्वरंटाइन में रखा गया।

सामान्य लक्षण : सिरदर्द, बंद नाक गले में खराश थूक के साथ खांसी ठंड लगना, उल्टी, तेज बुखार, किडनी का खराब होना।

बचाव के उपाय : जितना हो सके घर पर रहें और यात्रा या सार्वजनिक कार्य करने से बचे।

(२) अपने हाथ साबुन और गरम पानी कम से कम २० सेकंड के लिए धोते रहें।

(३) अपने हाथ बिना धोये अपनी आँखों नाक और मुहँ को न छूएँ।

(४) दो गाज की दूरी रखे। इस केलिए विद्यालय और कार्यालय आदि का बंद करना, यात्रा पर प्रतिबंध लगाना।

(५) डब्ल्यू.हेच.ओ.ने मास्क के इस्तेमाल सभी लोगों केलिए अनिवार्य बताया है।

कोरोना का प्रभाव मध्यवर्गीय और निम्न वर्ग के लोगों पर गिरा। जिसके कारण आर्थिक व्यवस्था कुंठित हो गयी। ति.ति.देवस्थान ने कोरोना निवारण केलिए हर दिन सुन्दरकांड का पारायण कर रहें हैं। भीड को नियंत्रण करने केलिए भक्तों केलिए निर्दिष्ट समय के अनुसार भेज रहे हैं।

हाल ही में आन्ध्रप्रदेश के नेल्लूर जिल्ला के कृष्णपट्णम गाँव में आनंदय्या जी कई सालों से जडीबूटियों से इलाज कर रहे हैं। वे इन जडी बूटियों से लेप बनाकर कोरोना निवारण केलिए दवा दे रहे हैं।

हर एक आदमी जरूरत पडने पर ही बाहर जाना चाहिए। व्यक्तिगत साफ-सुथरे की आवश्यकता है।

अन्नमाचार्य जयंती

भगवान श्री वेंकटेश्वरस्वामी जी के परम भक्त ताल्लपाका अन्नमाचार्य का जन्म १४०८ ई में ९ मई को आन्ध्रप्रदेश के कडपा जिल्ला, ताल्लापाका नामक गाँव में हुआ। इन के पिता नारायण सूरी कवि एवं पंडित थे। माता लक्कमांबा संगीत विद्वान थी। माता-पिता के गुणों से ओतप्रोत अन्नमय्या सोलह साल के उम्र से ही लिखना और गाना शुरु कर दिया। तब से लेकर अपने ९५ साल की संपूर्ण जीवन में अपनी आखरी सांस तक वे भगवान वेंकटेश्वर के कीर्तन गाते रहें। उन्होंने संकीर्तनों की रचना यूँही कभी-कभी लिखना या एक-दो ही नहीं लिखें, बल्कि हर दिन एक संकीर्तन को भगवान वेंकटेश्वर जी के चरणों में समर्पित करते हुए, ३२ हजार संकीर्तनाओं को लिखा।

जिस प्रकार संगीत और साहित्य अन्नमय्या के तनमन से जुडे हुए है, उसी प्रकार अपने भावों को व्यक्त करने में तेलुगु और संस्कृत भाषाएँ भी जुडकर उनकी नैपुण्य को बड़ाया। अन्नमय्या ने पूर्णरुप से तेलुगु पदों की ही रचना नहीं की बल्कि संस्कृत भाषा में भी रचना करके अपनी प्रतिभा दिखाई।

तेलुगु साहित्य इतिहास से प्राप्त प्रमाण के अनुसार अन्नमय्या, दक्षिणप्रान्त के भजन संप्रदाय तथा पदकविता शैली के आद्य माने जाते हैं। वे प्रथम 'वाग्गेयकारुडु' (गीतों का संगीतकार) नाम से भी जाने जाते है। इनके द्वारा प्रदान किया गया पदसंकीर्तन और भजन संप्रदाय को त्यागय्या, क्षेत्रय्या, भद्राद्री रामदासु आदि ने आगे बढ़ाया।

महाभक्त अन्नमय्या, कवि, गायक, संगीतज्ञ तथा तपस्वी के रुप में अपने संगीत की सुगंध को चारों ओर बिखरते हुए कई प्रकार की रचनाएँ की। इन में आध्यात्मिक, श्रृंगार कीर्तन, लोकगीत, (जानापदुलु) लोरियाँ (लालिपाटलु) चाँद के गाने (चंदमामा पाटलु), गोब्बल्ला पाटलु, तुम्मेदा पाटलु आदि प्रमुख है। इन में भी आध्यात्मिक तथा श्रृंगार, लोकगीत सब से लोकप्रियता हासिल की। श्रीहरी के चरण कमलों में समर्पित किए गए बत्तीस हजार (३२,०००) संकीर्तनों को सौ से अधिक धुनों में संकलित करके, पदकविता पितामह अपने लिए केवल कैवल्य प्राप्ति की ही अपेक्षा की, न कि धन की। उनका मानना है कि कोई भी गीत गाएँ या किसी भी रुप में कीर्तनों की रचना करें, हर प्रकार का भाव व्यक्तिकरण के प्रथम गुरु श्रीवेंकटेश्वर जी ही है।

- डॉ.श्री सुजाता

मोबैल : ९४९४०६४९१२

ऐसा मानाजाता है कि अन्नमय्या के पूर्वज १०वीं सदी में वारणासी में भयंकर अकाल पडने पर, आन्ध्रप्रान्त में आकर बस गए। उनके दादा-परदादाओं ने ताल्लपाका में स्थित श्री सिद्धेश्वर मंदिर में पुजारी के रुप में रहकर भगवान शिव जी की पूजा करते थे। इस बात के प्रमाण है कि वे ताल्लपाका में चेन्नकेशव मंदिर के बगल में घर बसाया। अन्नमय्या की पत्नी तिम्माक्का पहली तेलुगु कवइत्री मानी जाती है। इनका बड़ा पुत्र पेदा तिरुमलाचार्युडु। संगीत और साहित्य के विद्वान थे। दूसरा पुत्र नृसिंहा कवि, ये भी महान कवि माने जाते थे। अन्नमय्या का पोता ताल्लपाका चिन्नान्ना अपने ग्रन्थ 'अन्नमाचार्य चरितम्' में अन्नमय्या के जीवन की विशेषताओं को सुसंबद्ध किया। यह ग्रन्थ १९४८ ई. में प्राप्त हुई। इसका प्रचुरण भी किया गया।

अन्नमय्या द्वारा लिखित संकीर्तनाओं के ताम्रपत्र तिरुमला श्रीवारी प्रधान मंदिर के पास होने के बावजूद सैकडों साल सुरागार में पडे रहे। ''संकीर्तना भण्डारघर'' नाम से प्रसिद्ध 'ताल्लपाका खाना' में स्थित ताम्रपत्रों को सर्वप्रथम १८१६ ई. में ब्रिटिश अधिकारी ए.डी. ग्याम्बेल ने पता लगाया। उस समय यह पूरा क्षेत्र मद्रास प्रेसिडेन्सी के अधीन में था। पुरातत्व विषयों की सूची बनाने के क्रम में ब्रिटिश अधिकारी लेखक रावह सिविल ने इन ताम्रापत्रों को शिलालेख समझा। १८८८ ई. में सरकारी पुरालेखवेन्ता डॉ.हैज के सहायक वेंकय्याजी ने इन ताम्रपत्रों को 'संकीर्तना पत्र' के रुप में पहचाना। १९१५ ई. तक ब्रिटिश सरकार इन ताम्रपत्रों के बारे में पूरी तरह से जागरुक हुए।

ये ताम्र पत्र तीन प्रकार के है, ३३X२.५ इंच के, २७X१६ इंच के बडे पत्र, १५X७ इंच के साधारण पत्र। इन पत्रों की कुल संख्या २७०१ हैं। इन में

ताल्लपाका अन्नमाचार्य के - २,२८९
ताल्लपाका पेदात्तिरुमलय्या - २०५
ताल्लापाका तिरुमलय्या - ३७
और
छोटे - बडे पत्र-१७०, इनके अलावा कुछ ताम्रपत्र अहोबिलम् प्रान्त में, कुछ श्रीरंगम् क्षेत्र में, कुछ अन्य क्षेत्रों में पाये गए। कुल मिलाकर खो गए पत्र ही अधिक हैं। पहले ये सभी ताम्रपत्र तिरुमल तिरुपति देवस्थानम् के श्रीवेंकटेश्वर प्राच्य अनुसंधान संस्थान के अधीन में थें। अभी ति.ति.दे.म्यूजियम में है और इन को डिजिटाली कृत किया गया है। ताकि आनेवाली पीढ़ियों के लिए मूल्यवान उपहार के रुप में दे सकें।

श्रीपति मंदिर के शासनों का परिष्कार करनेवाले श्री साधु सुब्रमण्य शास्त्री जी ने ताल्लपाका वंशजों के पद साहित्य को कुछ हद तक परिष्कृत किया। इन के अलावा श्री वेटूरी प्रभाकरा शास्त्री जी ने अन्नमाचार्य के संकीर्तनों को प्रकाश में लाने के लिए कठिन परिश्रम करके चरितार्थ हुए। श्री राल्लापल्ली अनंताकृष्ण शर्मा, श्री गौरी पेदिदरामासुब्बाशर्मा,डॉ.पी.टी.जगन्नाधराव, श्री ए.के.श्रीनिवासाचार्युलु जैसे महान् पंडितों ने भी ताल्लपाका कवियों के संकीर्तनों के परिष्कृत किया है। अभी तक तीस से ऊपर इस संकीर्तनों के संस्करण मुद्रित किये गए।

अन्नमाचार्य के संकीर्तनों को लोकप्रिय बनाने के उद्धेश्य से १९७८ ई. में ति.ति.दे. ने अन्नमाचार्य प्रोजेक्ट की स्थापना की। उस समय के ति.ति.दे. कार्यनिर्वहणाधिकारी श्री पी.वी.आर.के.प्रसाद जी ने इस प्रोजेक्ट की योजना बनाई। इसका प्रथम निर्देशक श्री कामिशेट्टी श्रीनिवासुलु जी ने अपने मधुरस्वर से अन्नमय्या के गानों का टीका प्रस्तुत करके, उन्हे और ज्यादा लोकाप्रिय बनाया।

अन्नमय्या का जन्म स्थल ''ताल्लपाका'' को ति.ति.दे. ने १९७९ ई. में गोद लिया। इस क्षेत्र को विकास करने हेतु ति.ति.दे. ने कई कार्यक्रमों की आयोजना की। पुराने मंदिरों का मरम्मत करके करवाके, उन्हे पुनः स्थापित करके, नियमित रुप से पूजा कार्यक्रम करने के लिए उचित कदम उठाए गए। अन्नमय्या के पूर्वजों का निवास स्थान माने जानेवाले प्रदेश में एक मण्टप का निर्माण करके उस में अन्नमय्या की प्रतिमा की स्थापना की। भक्तों के भजन तथा ध्यान की सुविधा के लिए १९८२ ई. में 'अन्नमाचार्य ध्यान मंदिर' का निर्माण करके, शुरु किया गया।

पहली बार १९७८ ई मई २२,२३,२४ तारीखों को 'अन्नमाचार्य जयंती समारोह' का श्रीगणेश किया गया। ति.ति.दे. ने सब से पहले इसका आयोजन तिरुपति में किया। तब से लेकर पूरे आन्ध्र राज्य में ही नहीं बल्कि, देश तथा विदेशों में भी अन्नमय्या के जयंती एवं पुण्य तिथि समारोह विशेष रुप से मनाए जाते हैं। अन्नमय्या के ६०० वर्ष के जयंती समारोह के संदर्भ में ताल्लपाका के पास १०८ फुट की अन्नमय्या की प्रतिमा की स्थापना की गयी है। अपनी जिंदगी श्रीवेंकटेश्वरस्वामी जी के चरणकमलों में बिताकर, अन्नमय्या दुंदुभी नाम वर्ष के फलगुन बहुल द्वादशी के दिन १५०३ ई. में स्वर्गस्त हुए।

अन्नमय्या का ६१२ वीं जयंती समारोह इस साल २६ मई को मनाया जा रहा है।

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

लेखक लेखिकाओं से निवेदन

सप्तगिरि पत्रिका में प्रकाशन के लिए लेख, कविता, रचनाओं को भेजनेवाले महोदय निम्नलिखित विषयों पर ध्यान दें।

१. लेख, कविता, रचना, अध्यात्म, दैव मंदिर, भक्ति साहित्य विषयों से संबंधित हों।

२. कागज के एक ही ओर लिखना होगा। अक्षरों को स्पष्ट व साफ लिखिए या टैप करके मूलप्रति डाक या ई-मेइल (hindisubeditor@gmail.com) से भेजें।

३. किसी विशिष्ट त्यौहार से संबंधित रचनायें प्रकाशन के लिए ३ महीने के पहले ही हमारे कार्यालय में पहुँचा दें।

४. रचना के साथ लेखक धृवीकरण पत्र भी भेजना जरूरी है। 'यह रचना मौलिक है तथा किसी अन्य पत्रिका में मुद्रित नहीं है।'

५. रचनाओं को मुद्रित करने का अंतिम निर्णय प्रधान संपादक कार्य होगा। इसके बारे में कोई उत्तर प्रत्युत्तर नहीं किया जा सकता है।

६. मुद्रित रचना के लिए परिश्रमिक (Remuneration) भेजा जाता है। इसके लिए लेखक-लेखिकाएँ अपना बैंक प्रथम पृष्ठ जिराक्स (Bank name, Account number, IFSC Code) रचना के साथ जोड करके भेजना अनिवार्य है।

७. धारावाहिक लेखों (Serial article) का भी प्रकाशन किया जाता है। अपनी रचनाओं का भेजनेवाला पता-

प्रधान संपादक,
सप्तगिरि कार्यालय,
ति.ति.दे.प्रेस कांपौन्ड, के.टी.रोड,
तिरुपति – ५१७ ५०७. चित्तूर जिला।

(गतांक से)

अनुक्रम - II

श्रीमद्भगवद्गीता

तेलुगु मूल -
श्री कुप्पा विश्वनाथ शास्त्री

हिन्दी अनुवाद - श्री राजीव रतन
मोबाइल - ९४४०९२६८३०

मानव तपस्या अर्थात् शरीर को चाहे कितना भी हो कष्ट देने के इच्छुक रहता है। किन्तु दान देने के इच्छुक नहीं रहता ऐसा कहा जाता है। हाथ में रखे धन को देख चोर आप से माँगेगा? तुम्हे पैसे पूछेगा? नहीं वह मार कर धन लेकर भाग जाएगा। वह धन वहीं पर फेंक कर नहीं जाएगा। धन का इतना ध्यान रखता है मनुष्य। इसीलिए मानवों की कंजूसी, धन पर उसकी आकांक्षा को ध्यान में रख कर ‘‘दत’’ अर्थात् दान कीजिए ऐसा निर्णय लिया गया। ऐसा सभी मानवों ने समझा। किन्तु शेष दो ‘‘द’’ से क्या तात्पर्य है। कुछ मानवों ने एक ‘‘द’’ देवताओं के लिए दूसरा ‘‘द’’ दानवों के लिए है हमारे लिए नहीं ऐसा निर्णय ले लेते हैं। कुछ महर्षि एकत्रित हो आपस में विचार विमर्श करते हैं कि प्रजापति ने स्वयं तीन बार ‘‘द’’ उच्चारण किया हम केवल एक ‘‘द’’ का तात्पर्य ढूँढ लेना कहाँ तक उचित है तीन ‘‘द’’ का अर्थ ढूँढना होगा। यदि उन्हें एक ही ‘‘द’’ कहना होता तो देवताओं को व्यक्तिगत रुप से बुलाकर वैसे ही मनुष्यों को बुलाकर तथा दानवों बुलाकर केवल ‘‘द’’ उच्चरित करते। नहीं तो तीनों को एक साथ बुलाकर सभा की मर्यादा व समय को बचाने के उद्देश्य से केवल एक बार ही ‘‘द’’ कह देते तीन बार ‘‘द’’ क्यों कहा। इसका कोई उद्देश्य होगा इसलिए ऐसा उपदेश दिया होगा। यह केवल देवता या राक्षसों के लिए मात्र नहीं है। यह मनुष्य और हमारे लिए ही है। यह हम महर्षि हैं। महर्षियों ने ऐसा ही सोचा। इसीलिए उन्होंने सोचा दाम्यता, दत्त, दान की जितनी मात्रा में आवश्यकता हो करें। ‘‘दायत्व’’ दया रखिए। यही उपदेश हमें देना हो तो यह तीन गुण हम में होने चाहिए। देव, दानव, मानव यह तीन लक्षण हम में होनी चाहिए। तभी हम यह उपदेश ग्रहण कर सकते हैं। हम में भी देवता के गुण हैं।

हम में भी सकारात्मकता है। हम में दानवों की क्रूरता भी होती है। इसीलिए नकारात्मक विचार होते हैं। मानव के कुछ सहज गुण है।

अधिक कहना पड़े तो देवता कह लाने वालों का जन्म पुण्य कार्यों के कारण ही होता है। केवल किए गए पाप कार्यों के कारण दानवों का जन्म होता है। अत्यधिक पाप कर्मों के कारण दानवों के रूप में जन्म लेते हैं। अत्यधिक पुण्य कर्मों के कारण देवता के रूप में जन्म लेते हैं। तब मनुष्य का जन्म कैसे होता है। यह जो पाप और पुण्य मिल जाते हैं तब मनुष्य का जन्म होता है। जब पाप और पुण्य मिलकर रहते हैं तब इन दैविक दानव गुणों में निरंतर युद्ध चलता रहता है। ऐसे में दैवीय गुणों की विजय होने पर हमें जागृत रहना चाहिए। दानव गुणों की विजय होने पर और भी जागृत रहने की आवश्यकता होती है। मानव गुणों की विजय पर इस से भी अधिक ऊपर जाकर प्रयास करना पड़ेगा। यह प्रजापति का उपदेश है। हम सभी इन स्वभाओं से भलीभाँति परिचित हैं। मानव सद्‌गुणों का भण्डार है।

क्रमशः

तिरुमल तिरुपति देवस्थान, तिरुपति।

तिरुमल यात्री इनका आचरण न करें, तो अच्छा होगा।

- ☒ अपने साथ कीमती आभूषण या अधिक नकद न रखें।
- ☒ भगवान के दर्शन के लिए मात्र ही तिरुमल पधारें, अन्य किसी उद्देश्य से नहीं।
- ☒ दर्शन के लिए जल्दबाजी न करें, क्यू लाइन में ही सक्रम जाने का प्रयत्न करें।
- ☒ मंदिर के आचार-व्यवहारों के अनुरूप मंदिर में प्रवेश निषिद्ध है, तो कृपया मंदिर को न आवें।
- ☒ तिरुमल में सभी फूल भगवान की पूजा के लिए है इसलिए पुष्पों का धारण न करें।
- ☒ पानी और बिजली को वृथा न करें।
- ☒ अपरिचितों को काटेज में प्रवेश न दें। चाबियों को उन्हें न सौंपें।
- ☒ पर्यावरण प्रदूषण नियंत्रिक थैलियों के अलावा किसी अन्य प्लास्टिक थैलियों का उपयोग न करें।
- ☒ चार माडावीथियों में चप्पल धारण न करें।
- ☒ भगवान दर्शन और आवास के लिए धोखेबाज या दलाल से संपर्क न करें।
- ☒ फेरीवालों से नकली प्रसाद मत खरीदें।
- ☒ तिरुमल मंदिर के परिसरों में थूकना आदि असह्य कार्य न करें।
- ☒ सेलफोन, कैमेरा जैसी चीजें और आयुधों को मंदिर के अंदर न ले जायें।
- ☒ विविध राजकीय कार्यकलाप, सभायें, ब्यानर, रास्तारोक, हडताल आदि सप्तगिरियों पर निषेधित है।

तिरुमल में निषेधित कार्य

- ⊘ तिरुमल में धूम्रपान, शराब, मांसाहार आदि निषेधित हैं।
- ⊘ अन्य मतों का प्रचार न करें।
- ⊘ पशु, पक्षी का वध निषेधित है।
- ⊘ तिरुमल में जुआ, पासा आदि को खेलना या अन्य खेलों में धन को बाजी लगाना निषेधित है।
- ⊘ भिखमंगों का प्रोत्साहन न करें।
- ⊘ तिरुमल में प्रईवेट व्यक्तियों द्वारा केशखंडन या कल्याणकट्टाओं (क्षुरकशाला) को चलाना निषेधित है।
- ⊘ आवास को अनधिकारिक तौर पर देना या लेना मना किया गया है।

अक्षयतृतीया भारतीय संस्कृति का एक महत्वपूर्ण पर्व है। अक्षयतृतीय या आखातीज वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि को कहते हैं। पौराणिक ग्रंथों के अनुसार इस दिन जो भी शुभ कार्य किए जाते हैं, उनका अक्षय फल मिलता है। इसी कारण इसे 'अक्षयतृतीया' कहा जाता है। वैसे तो सभी बारह महीनों की शुक्ल पक्षीय तृतीया शुभ होती है, किंतु वैशाख माह की तिथि स्वयंसिद्ध मुहूर्तों में मानी गई है।

अक्षय तृतीया सर्वसिद्ध मुहूर्त के रुप में भी विशेष महत्व है। मान्यता है कि बिना कोई पंचांग देखे भी शुभ व मांगलिक कार्य जैसे विवाह, गृह प्रवेश, वस्त्र-आभूषणों की खरीददारी या घर, भूखंड, वाहन आदि की खरीददारी से संबंधित कार्य इस दिन किए जा सकते हैं। नवीन वस्त्र, आभूषण आदि धारण करने और नई संस्था, समाज आदि की स्थापना या उद्घाटन का कार्य श्रेष्ठ माना जाता है। पुराणों में लिखा है कि इस दिन पितरों को किया गया तर्पण तथा पिन्डदान अथवा किसी और प्रकार का दान, अक्षय फल प्रदान करता है। इस दिन गंगा स्नान करने से तथा भगवत पूजन से समस्त पाप नष्ट हो जाते हैं। यहाँ तक कि इस दिन किया गया जप, तप, हवन, स्वाध्याय और दान भी अक्षय हो जाता है। यह तिथि यदि सोमवार तथा रोहिणी नक्षत्र के दिन आए तो इस दिन में किए गए दान, जप-तप का फल बहुत अधिक बढ़ जाता हैं। इस के अतिरिक्त यदि यह तृतीया दोपहर से शुरु होकर प्रदोष काल तक रहे तो बहुत ही श्रेष्ठ मानी जाती है। यह भी माना जाता है कि आज के दिन मनुष्य अपने या स्वजनों द्वारा किए गए जाने-अनजाने अपराधों को क्षमाकर देते हैं और उसे सदगुण प्रदान करते हैं, अतः आज के दिन अपने दुर्गुणों को भगवान के चरणों में सदा के लिए अर्पित कर उन से सद्गुणों का वरदान माँगने की परंपरा भी हैं।

- श्री सी.सुधाकर रेड्डी,
मोबाइल - ९८६६०६०२६९

हिन्दू धर्म में अक्षयतृतीया का महत्व :

अक्षयतृतीया के दिन ब्रह्म मुहूर्त में उठकर समुद्र या गंगा स्नान करने के बाद भगवान विष्णु की शांत चित्त होकर विधि-विधान से पूजा करने का प्रावधान है। नैवेद्य में जौ या गेहूँ का सत्तू, कंकड़ी और चने की दाल अर्पित किया जाता है। तत्पश्चात फल, फूल, बरतन तथा वस्त्र आदि दान करके ब्रह्मणों को दक्षिणा दी जाती है। ब्राह्मण को भोजन करवाना कल्याणकारी समझा जाता है। मान्यता है कि

इस दिन सत्तू अवश्य खाना चाहिए तथा नए वस्त्र और आभूषण पहनने चाहिए। गौ, भूमि, स्वर्ण, पात्र इत्यादि का दान भी इस दिन किया जाता है। यह तिथि वसंत ऋतु के अंत और ग्रीष्म ऋतु का प्रारंभ का दिन भी है इसीलिए अक्षय तृतीया के दिन जल से भरे घड़े, कुल्हड, पंखे, खडाऊँ, छाता, चावल, नमक, घी, तरबूज, ककडी चीनी, साग, इमली, सत्तू आदि गरमी में लाभकारी वस्तुओं

का दान पुण्यकारी माना गया है। इस दान के पीछे यह विश्वास है कि इस दिन जिन-जिन वस्तुओं का दान किया जाएगा, वे समस्त वस्तुएँ स्वर्ग या अगले जन्म में प्राप्त होगी। इस दिन लक्ष्मी नारायण की पूजा सफेद कमल अथवा सफेद या पीले गुलाब से करना चाहिए।

"सर्वत्र शुक्ल पुष्पाणि प्रराస्तानि सदार्चने।

दानकाले च सर्वत्र मंत्र मेता मुदीरयेत्।।"

अर्थात् सभी महीनों की तृतीया में सफेद पुष्प से किया गया पूजन प्रशंसनीय माना गया है।

ऐसा भी मान्यता है कि अक्षयतृतीया पर अपने अच्छे आचरण और सद्गुणों से दूसरों का आशीर्वाद लेना अक्षय रहता है। भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की पूजा विशेष फलदायी मानी गई है। इस दिन किया गया आचरण और सत्कर्म अक्षय रहता है।

भविष्य पुराण के अनुसार इस तिथि की युगादि तिथियों में गणना होती है, सतयुग और त्रेतायुग का प्रारंभ इसी तिथि से हुआ है। भगवान विष्णु ने नर-नारायण, हयग्रीव और परशुराम जी का अवतरण भी इसी तिथि में हुआ था। ब्रह्माजी के पुत्र अक्षय कुमार का आविर्भाव भी इसी दिन हुआ था। इस दिन बद्रीनाथ जी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा की जाती है और श्री लक्ष्मीनारायण के दर्शन किए जाते हैं। प्रसिद्ध तीर्थ स्थान बद्रीनारायण के कपाट भी इसी तिथि से ही पुनः खुलते है। वृंदावन स्थित श्री बांके बिहारी जी के मंदिर में भी केवल इसी दिन श्री विग्रह के चरण दर्शन होते है, अन्यथा वे पूरे वर्ष वस्त्रों से ढके रहते हैं।

जी.एम.हिंगे के अनुसार तृतीया ४१ घंटे २१ पल होती है तथा धर्म सिंधु एवं निर्णय

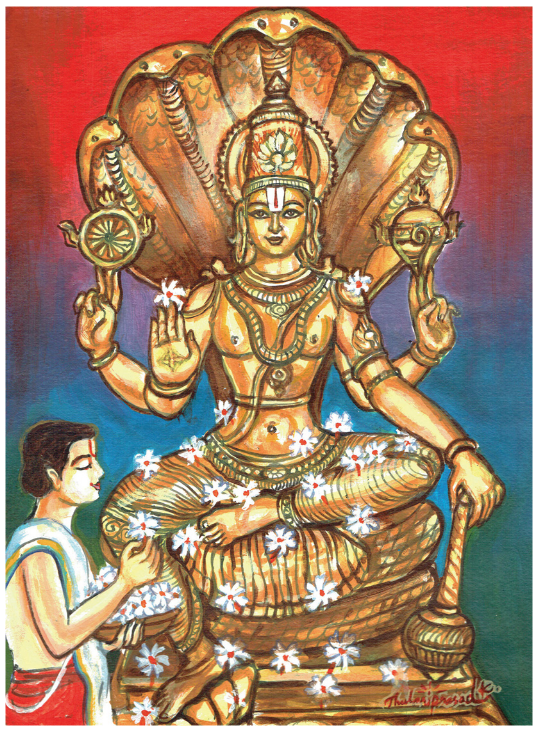

सिंधु ग्रंथ के अनुसार अक्षय तृतीया ६ घंटी से अधिक होना चाहिए। पद्म पुराण के अनुसार इस तृतीया को अपराह व्यापिनी मानना चाहिए। इसी दिन महाभारत का युद्ध समाप्त हुआ था और द्वापर युग का समापन भी इसी दिन हुआ था। ऐसी मान्यता है कि इस दिन से प्रारंभ किए गए कार्य अथवा इस दिन को किए गए दान का कभी भी क्षय नहीं होता।

मदनरत्न के अनुसार

"अस्यांतियौ क्षयमुर्पति हुतं न दत्तं।
तेनाक्षयति कथिता मुनिभिस्तृतीया।।
उद्धिष्य दैवतपितृन्क्रियते मनुष्यैः
तत् च अक्षयं भवति भारत सर्वमेव।।

प्रचलित पौराणिक कथाएँ :

अक्षय तृतीया की अनेक व्रत कथाएँ प्रचलित हैं। ऐसी ही एक कथा के अनुसार प्राचीन काल में एक धर्मदास नामक वैश्य था। उसकी सदाचार, देव और ब्राह्मणों के प्रति काफी श्रद्धा थी। इस व्रत के महात्य को सुनने के पश्चात उसने इस पर्व के आने पर गंगा में स्नान करके विधिपूर्वक देवी-देवाताओं की पूजा की। व्रत के दिन स्वर्ण, वस्त्र तथा दिव्य वस्तुएँ ब्राह्मणों को दान में दी। अनेक रोगों से ग्रस्त तथा वृद्ध होने के बावजूद भी उसने उपवास करके धर्म-कर्म का और दान पुण्य किया। यही वैश्य दूसरे जन्म में कुशावती का राजा बना कहते है कि अक्षयतृतीया के दिन किए गए दान व पूजन के कारण वह बहुत धनी प्रतापी बना। वह इतना धनी और प्रतापी राजा था कि त्रिदेव तक उस के दरबार में अक्षय तृतीया के दिन ब्राह्मण के वेषधारण करके उसके महायज्ञ में शामिल होते थे। अपनी श्रद्धा और भक्ति का उसे कभी घमंड नहीं हुआ और महान वैभवशाली होने के बावजूद भी वह धर्म मार्ग से विचलित नहीं हुआ। माना जाता है कि यही राजा आगे चलकर राजा चन्द्रगुप्त के रुप में पैदा हुआ।

स्कन्द पुराण और भविष्य पुराण में उल्लेख है कि वैशाख शुक्ल पक्ष की तृतीया को रेणुका के गर्भ से भगवान विष्णु ने पराशुराम के रुप में जन्म लिया। कोंकण और चिप्लून के परशुराम

मंदिरों में इस तिथि को परशुराम जयंती बडी धूम-धाम से मनाई जाती है दक्षिण भारत में परशुराम जयंती को विशेष महत्व दिया जाता है। परशुराम जयंती होने के कारण इस तिथि में भगवान परशुराम के आविर्भाव की कथा भी सुनी जाती है। इस दिन परशुराम जी की पूजा करके उन्हें अर्घ्य देने का बड़ा माहात्य माना गया है। सौभाग्यवती स्त्रियाँ और क्वारी कन्याएँ इस दिन गौरी पूजा करके मिठाई फल और भीगे हुए चने बाँटती हैं, गौरी-पार्वती की पूजा करके धातु या मिट्टी के कलश में जल, फल, फूल, तिल, अन्न आदि लेकर दान करती है। मान्यता है कि इसी दिन जन्म से ब्राह्मण और कर्म से क्षत्रिय भृगुवंशी परशुराम का जन्म हुआ था। एक कथा के अनुसार परशुराम की माता और विश्वामित्र की माता के पूजन के बाद प्रसाद देते समय ऋषि ने प्रसाद बदलकर दे दिया था जिस के प्रभाव से परशुराम ब्राह्मण

होते हुए भी क्षत्रिय स्वभाव के थे और क्षत्रिय पुत्र होने के बाद भी विश्वामित्र महर्षि कहलाए। उल्लेख है कि सीता स्वयंवर के समय परशुराम जी अपना धनुष बाण श्री राम को समर्पित कर सन्यासी का जीवन बिताने अन्यत्र चले गए। अपने साथ एक फरसा रखते थे तभी उनका नाम परशुराम पड़ा।

समाज में इस तिथि का असर :

इस दिन में शादी-ब्याह करने की शुरुआत होती हैं। बड़े-बुजुर्ग अपने पुत्र-पुत्रियों के लगन का मांगलिक कार्य आरंभ कर देते हैं। अनेक स्थानों पर छोटे बच्चे भी पूरी रीति-रिवाज के साथ अपने गुड्डा-गुडिया का विवाह रचाते हैं। इस प्रकार गाँवों में बच्चे सामाजिक कार्य व्यवहारों को स्वयं सीखते व आत्मसात करते हैं। कई स्थानों पर तो परिवार के साथ-साथ पूरे के पूरे गाँव भी बच्चों के द्वारा रचे गए वैवाहि कार्यक्रमों में सम्मिलित हो जाता है। इसलिए कहा जा सकता है कि अक्षयतृतीया सामाजिक व सांस्कृतिक शिक्षा का अनूठा त्यौहार है। कृषक समुदाय में इस दिन एकत्रित होकर आनेवाले वर्ष के आगमन, कृषि पैदावर आदि के शगुन देखते है। ऐसा विश्वास है कि इस दिन जो सगुन कृषकों को मिलते है, वे शत-प्रतिशत सत्य होते हैं। राजपूत समुदाय में आनेवाला वर्ष सुखमय हो, इसलिए इस दिन शिकार पर जाने की परंपरा है।

विभिन्न प्रांतों में अक्षयतृतीया की परंपरा :

बुदेलखंड में अक्षयतृतीया से प्रारंभ होकर पूर्णिमा तक बड़ी धूमधाम से उत्सव मनाया जाता है, जिस में कुँवारी कन्याएँ अपने भाई, पिता तथा गाँव-घर और परिवार के लोगों को शगुन बाँटती हैं और गीत गाती हैं। अक्षयतृतीया को राजस्थान में वर्षा के लिए शगुन निकाला जाता है। वर्षा की कामना की जाती है। ऐसा माना जाता है कि इस दिन कृषि कार्य का किसानों को समृद्धि देता हैं।

अक्षयतृतीया की तिथि इस साल में :

हिन्दू पंचांग के अनुसार इस साल (२०२१ में) वैशाख मास के शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि १४ मई, २०२१ दिन शुक्रवार को पड़ रही है। ऐसी मान्यता है कि अक्षयतृतीया के दिन दान देने से दुगुने फल की प्राप्ति होती है। इस के अलावा सनातन धर्म में यह भी माना जाता है कि इस दिन सोना खरीदना शुभदायक और लाभदायी होता है।

लोगों का विश्वास धार्मिक मान्यता है कि अक्षय तृतीया के दिन जुटाए गए भौतिक संसाधन हमारे जीवन में हमेशा बने रहते है। चूँकि इस दिन मुहूर्त होने से कोई भी शुभ कार्य या नया कार्य कर सकते हैं। इसलिए अक्षय तृतीया के दिन लोग नए काम की शुरुआत करने के साथ ही बर्तन, सोना चाँदी और अन्य कीमती वस्तुओं की खरीदारी करते है। माना जाता है कि इस दिन खरीदा गया सोना पीढियों के साथ बढ़ता जाता है। यह भी मान्यता है कि इस दिन सोना खरीदने से सुख-समृद्धि की अपार वृद्धि होती है, घर-परिवार में सदैव खुशहाली बनी रहती है।

धार्मिक मान्यता है कि अक्षय तृतीय के दिन सूर्य की किरणें बहुत तेज होती है। सोने का संबंध सूर्य से होता है, इसलिए अक्षयतृतीया के दिन सोना खरीदना शक्ति और ताकत का प्रतीक माना जाता है।

महा भक्तिन एवं कवयित्रि मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा

- डॉ.आर.गायत्री,
मोबाइल - ९५९०८३७२८०

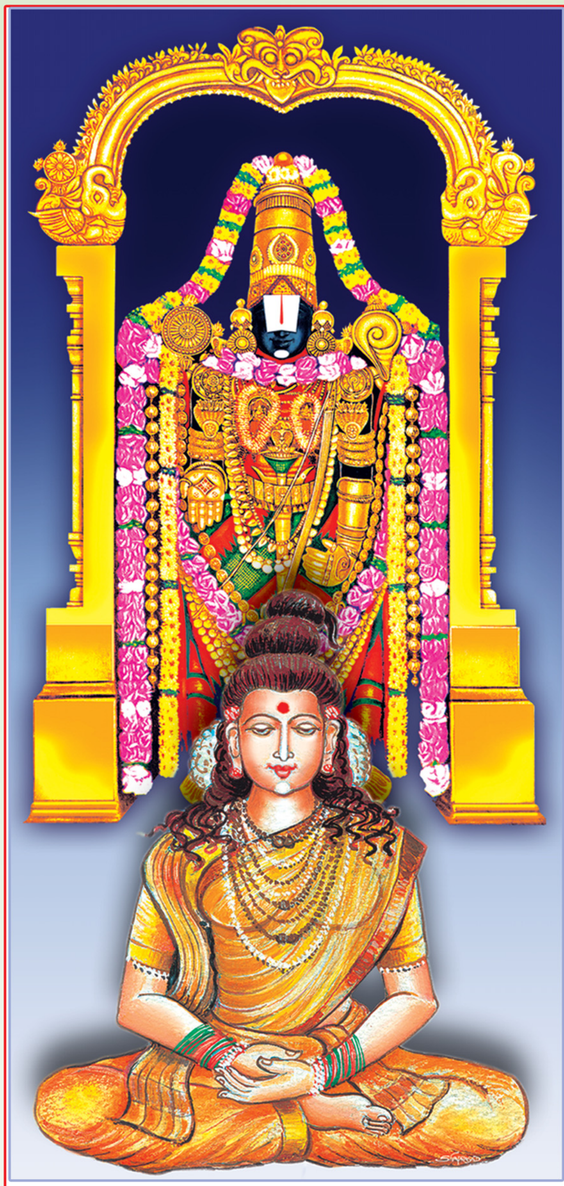

भक्ति मनुष्य का उदात्त एवं श्रेष्ठ चिंतन है। यह मानव हृदय की दिव्य एवं पवित्र अनुभूतियों पर आश्रित है। भक्ति मूलतः निष्ठा एवं विश्वास पर अवलंबित होती है। भक्ति का मूलाधार आध्यात्मिक भावना है। यह भगवान के प्रति सच्ची लगन एवं पवित्र प्रेम ही है। अतः मनुष्य अपने सर्वस्व को भगवान के प्रति समर्पित करना ही भक्ति की पराकाष्ठा है। नारद भक्ति सूत्र में भक्ति को परम प्रेम रूप और अमृत स्वरूप कहा गया है।

मूलतः भक्ति नौ प्रकार की होती है वे हैं- श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, दास्य, सख्य और आत्म निवेदन- इन्हें नवधा भक्ति कहते हैं। ऐसे ही भगवान के प्रति माधुर्य भाव की भक्ति भी होती है। वस्तुतः भगवान के समीप जाने की मूल सोपान है- भक्ति

प्राचीन काल से ही भारत भक्त जनों की पावन भूमि है। संपूर्ण भारत में ऐसे कई महान भक्त व कवियों के जन्म हुए हैं। दक्षिण भारत में भी महान भक्तों के जन्म हुए हैं। खास कर आंध्रप्रदेश में अपने को समर्पित करनेवाले बहुत से भक्त हैं उन पुरुषों में अन्नमाचार्य प्रथम भक्त हैं तो स्त्रियों में तरिगोंडा वेंगमांबा भी है। श्री वेंकटेश्वर स्वामी के भक्त कवियों में मुख्य रूप से दो नाम सुनाई देते हैं, वे दोनों वाग्गेयकार हैं। वे हैं - श्री अन्नमय्या और तरिगोंडा वेंगमांबा। अन्नमय्या की भक्ति दास्य भक्ति है तो वेंगमांबा की भक्ति माधुर्थ भक्ति की है। हिन्दी में मीराबाई कवयित्रियों में सर्वश्रेष्ठ एवं सुप्रसिद्ध है। उसी प्रकार तेलुगु में भी बहुत सी कवयित्रियाँ उद्भव हुई हैं। उन में तरिगोंडा वेंगमांबा भी एक है जो मूलतः वैष्णव भक्ति संप्रदाय से जुडी हुई हैं। वे भी मीराबाई की तरह लौकिक जीवन से अलौकिक जीवन की ओर उन्मुक्त हुई हैं।

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा भक्तिन कवयित्री और साधिका भी है। वे कलियुग देव श्री वेंकटेश्वर स्वामी के लीलाओं से जुडी काव्य कृतियाँ लिखी हैं।

मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा का जन्म विशेषताएँ :

भक्त कवयित्री तरिगोंडा वेंगमांबा का जन्म आंध्राप्रदेश के चित्तूर जिले में स्थित तरिगोंडा नामक गाँव में हुआ था। गाँव का नाम ही इस कवयित्री का उपनाम बन गया है। तरिगोंडा में इन का जन्म काल लगभग १७३० को माना जाता है। तरिगोंडा में वेंगमांबा का जन्म एक गरीब ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इन के माता-पिता कानाल कृष्णय्या तथा मंगमांबा थे। वे अपनी बेटी को श्री वेंकटेश्वर स्वामी का वर प्रसाद समझते थे। बचपन से ही वेंगमांबा में योगिनी तथा भक्तिन के लक्षण विध्यमान थे। माता-पिता इसे देखकर बहुत प्रसन्न थे। परंतु निरंतर आध्यात्मिक भावना एवं चिंतन में डूबी रहनेवाली वेंगमांबा के भविष्य को लेकर वे चिंतित थे। वेंगमांबा की एक और विशेषता है कि उन्हे संगीत और नृत्य सहज ही प्राप्त हुआ है। वे सदा भक्ति कीर्तन एवं नृत्य करती रही है।

वैवाहिक जीवन :

जब वेंगमांबा आध्यात्मिक चिंतन में तल्लीन होकर गीत गाती और नृत्य करती रहती थी तो अडोस-पडोस के लोग वेंगमांबा की भक्ति पारवश्य को पागलपन समझने लगे थे। इस से बचने केलिए बचपन में ही वेंगमांबा का विवाह बलपूर्वक कर दिया गया। वेंगमांबा के पति श्रीवत्स गोत्र के इंजेटि वेंकटाचलपति थे। किंतु दुर्भाग्यवश विवाह के कुछ समय में ही उन का देहांत हो गया। वेंगमांबा बालविधवा बन गयी। इस घटना से वेंगमांबा में वैराग भावना और बढ गयी है। बालविधवा बनने पर भी वे निर्भीक रही है। वे क्रांतिकारी भावनाओं से अपने समय में विधवाओं पर होनेवाले अन्याय एवं अत्याचारों का विरोध की हैं। अपने मार्ग के सभी संकटों को स्वयं दूर करके अपने मनचाहा मार्ग पर आगे बढी हैं। प्रतिकूल परिस्थितियों में भी अपने ही लोगों के विरोध के बावजूद अपने विश्वसनीय मार्ग पर चलकर सभी भक्तों के लिए उन्होंने आदर्श खडे

हुए हैं। उनके उदात्त व्यक्तित्व की एक उदाहरण इस प्रकार है कि-

दूषणंबुलु विनि दुःखितुवेला?
भूषणंबुलु गनि पोंगेदवे वेला?
द्वेषुले हितुलनि तेलियवे बाला।
रोषमुनु त्रुंचि पोरुट मानुमबाला।

स्पष्ट है कि निन्दा से दुःखी न होकर प्रशंसा से न फूलकर दोनों को समान रूप में स्वीकारना चाहिए। द्वेष करनेवाले ही हितैषी होते हैं रोष को छोडना है और झगडा करना छोड देना है।

वेंगमांबा को पिता कृष्णय्या ने मदनपल्ले नामक गाँव के रूपावतारम सुब्रह्मण्यम शास्त्री से गुरुदीक्षा दिलायी हैं। तब से वेंगमांबा सदा आध्यात्मिक भावना में रहने लगी। बहुत शीघ्र ही तपस्विनी बन गयी। उनके मुँह से प्रवाह की तरह संकीर्तन एवं गीत निकलते रहे। वेंगमांबा के कीर्तनों को सुनकर लोग बहुत आदर

किया करते थे। इस रूप में गौरव प्राप्त होना कुछ लोगों को अच्छा नहीं लगा। विधवा होकर भी सुहागिन की तरह व्यवहार करनेवाली वेंगमांबा को देखकर गाँव के सम्प्रदायवाले उनका विरोध करने लगे। साथ ही उन्हें तथा उन के परिवार को गाँव से बहिष्कार करवाया गया। गाँववालों वेंगमांबा को कई यातनाएँ देने लगे। वेंगमांबा भी इन की ओर ध्यान न देकर स्थानीय नृसिंह मंदिर के पूजा-पाठ में लगी रहती थी। वहीं ध्यान एवं योग साधना किया करती थी। कुछ साम्प्रदायिक लोगों ने वेंगमांबा को कई यातनाएँ देकर वहाँ पर भी वेंगमांबा को ध्यान भंग करके वहीं भी रहने नहीं दिया। इस घटना से वेंगमांबा ने मन में दृढ़ संकल्प किया कि आगे तरिगोंडा में वह नहीं रहेगी और तिरुमला जाकर अपनी शेष जीवन श्री वेंकटेश्वर के चरण कमल की सेवा में समर्पित करेगी। यही संकल्प वेंगमांबा को श्री वेंकटेश्वर स्वामी की अनुपम भक्तिन व अद्वितीय कवयित्री बनने का सुअवसर था। तुरंत वे सीधे पैदल चलकर तिरुमला पहुँच गयी। तिरुमल पहाड का जीवन भी वेंगमांबा केलिए सुखमय नहीं रहीं। वेंगमांबा ने अपनी अचंचल दीक्षा और समर्पण से सब को अपने वश में कर लिया। कहा जाता है कि आरम्भ में वेंगमांबा तिरुमल पहाड पर स्थित तुम्बुर तीर्थ जाकर कई वर्षों तक घोर तप किया। फिर तिरुमल पहाड पर लौटकर श्री वेंकटेश्वर स्वामी मंदिर के पास वृन्दावन बसाकर रहने लगी। अंत में अपने द्वारा बसाया वृन्दावन में ही सजीव समाधि ली।

तरिगोंडा वेंगमांबा की काव्य कृतियाँ :

वेंगमांबा अपने जीवन आरंभ में तरिगोंडा में स्थित नृसिंह देव की भक्तिन रही है। तरिगोंडा छोडकर तिरुमल पहाडों पर पहुँचने के बाद श्री वेंकटेश्वर की भक्तिन बनी है। वे श्री कृष्ण और श्री वेंकटेश्वर को एक समान मानती थी। तरिगोंडा वेंगमांबा भक्ति चिंतन को समृद्ध बनानेवाली कवयित्री हैं। यह वेंगमांबा की वैशिष्ठ्य है कि भक्तिन व कवयित्री के रूप में भक्ति चिंतन एवं सृजनात्मकता दोनों को सम्मिलित करके कृतियाँ लिखना। तरिगोंडा वेंगमांबा की सर्व प्रथम कृत 'नृसिंह शतक' है। इस में वेंगमांबा ने अपने प्रिय आराध्य देव तरिगोंडा नृसिंह स्वामी का कीर्तन गाया है। इतना ही नहीं वे अपने आराध्य श्री वेंकटेश्वर स्वामी की कथा को भक्तिन व कवयित्री रूप में अत्यंत प्रामाणिक एवं जन रंजक बनाया है। यह भी माना जाता है कि तिरुमला पर वेंगमांबा के आश्रम- कुटीर में रोजाना सारस्वत गोष्ठियाँ हुआ करती थी। वेंगमांबा अपनी कृतियों को साक्षात् श्री वेंकटेश्वर स्वामी को सुनाया करती थी। वेंगमांबा के द्वारा लिखित काव्य कृतियों को लिपिबद्ध करने और नकल उतारने केलिए 'अष्टघंटमुलू' लेखक हुआ करते थे। वेंगमांबा ने कुल अठारह रचनाएँ लिखी जो आज भी हमें उपलब्ध है।

भक्तजनों केलिए यह एक वरदान है निधि है जो भक्ति विकास में सहायक सिद्ध होती हैं। मातृश्री वेंगमांबा श्री वेंकटेश्वर स्वामी से इस प्रकार प्रार्थना की है -

श्री वेंकटेश ना चित्तंबु नंदु
नी पाद युगलंबु निलुपवा कृष्णा।
नन्नेलु तरिगोंड नरमृगाकृतिनि
प्रत्यक्षमै नन्नु पालिंपु कृष्णा।

अर्थात् वेंगमांबा श्री वेंकटेश्वर से विनति कर रही है कि हे वेंकटेश्वर मेरे मन में बस जाओ। आप के चरणों की सेवा करने का मन मुझे दो। मेरी देखभाल करनेवाले तरिगोंडा के नृसिंह दर्शन देकर मेरी रक्षा करो।

वेंगमांबा भक्तिन, कवयित्री एवं साधिका ही नहीं बल्कि समाज सुधारक, दार्शनिक विचार धारा व्यक्तित्व रखनेवाली पथ प्रदर्शक भी है। उनकी दार्शनिक दृष्टि में द्वैत तथा अद्वैत दोनों समान है। उन की दृष्टि में ईश्वरीय तत्व एक ही है। जो सब में निवासित हैं। उनकी दृष्टि में ईश्वरीय तत्व सोने की तरह जो सभी आभरणों में होता हैं। यह विचार इस प्रकार प्रस्तुत है कि -

बंगारमोकटिये बहु भूषणमुलु
श्रृंगारमुल चेत चित्रंबुलैन
हेमरुपंबु लेन्नग वेरुलैन
हेमंबुनकु भेद मेदैन गलदे?

तरिगोंडा वेंगमांबा अपनी जीवन पर्यंत कलियुग दैव श्री वेंकटेश्वर की गुणगान करती रही। इस रूप में वेंगमांबा की जीवनयात्र तरिगोंडा से शुरु होकर तिरुमल पहाड पर सिमट जाती है। भक्ति-महाग्नि को जलाकर उस में अपने को आहुति देकर मोक्ष प्राप्त करनेवाली पवित्रात्मा है मातृश्री वेंगमांबा।

आदि तथ्यों से ज्ञात होता है कि भक्ति ही जीवन मार्ग है। भक्ति ही मुक्ति है। भक्ति ही जीवन का परमार्थ है। भक्ति के बिना मानव जीवन सार्थक नहीं बन पाती है तथा भक्तजनों के लिए भगवान की सान्निध्य प्राप्ति को सुलभ बनानेवाले मुख्य घटक है- भक्ति। भक्त व भक्तिन अपने सारे जीवन को सिर्फ भगवान के लिए ही समर्पित किए है। ऐसे भक्त एवं कवि, कवयित्रियाँ परोपकारार्थ एवं निस्वार्थ चिंतन से जीवन पथ से विचलित लोगों को सही मार्गदर्शक बन पाते हैं।

ऐसे ही मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा के संपूर्ण जीवन आज के सामाजिक समस्याओं से त्रस्त मानव जीवन को संदेशात्मक एवं मानवीय दृष्टिकोण को अवलंबित करनेवाली जीवत आदर्श एवं आचरणीय पथ प्रदर्शक बन गयी है। इस प्रकार मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा इस कलियुगांत तक समस्त मानव हृदयों में नित्य स्मरणीय बन गयी है।

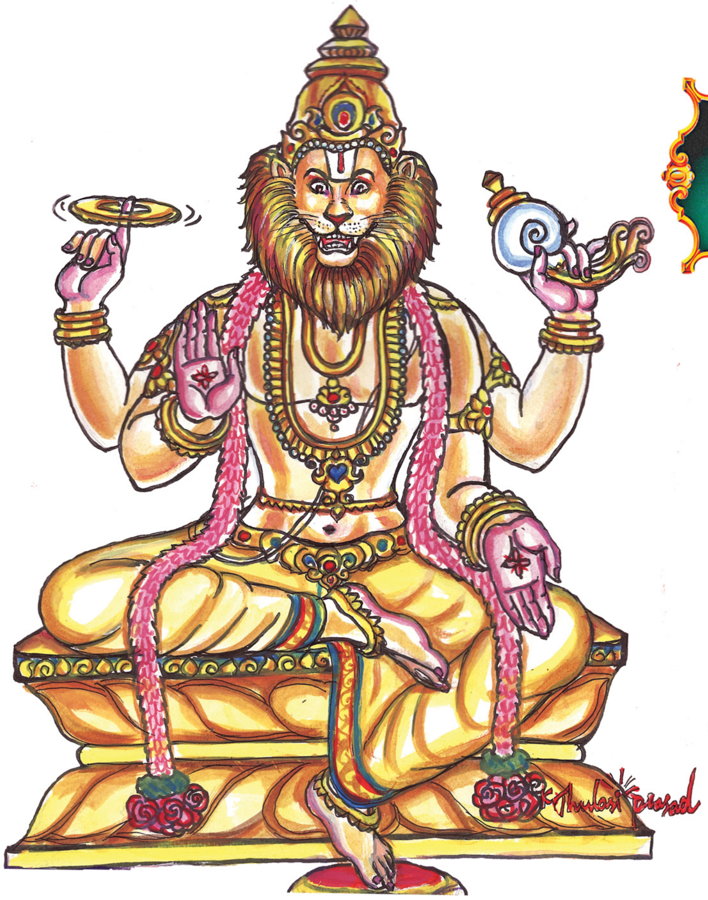

श्री नरसिंह जयंती

- डॉ.पी.बालाजी
मोबैल :८०७४५९८२९१

ओम (ॐ) उग्रं वीरं महाविष्णु ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्।
नृसिंह भीषणं भद्रं मृत्युमृत्यं नमाम्याम्।।

नरसिंह माने नार+सिंह (मानव+सिंह) को पुराणों में भगवान विष्णु का अवतार माना गया है। जो आधे मानव एवं आधे सिंह के रुप में प्रकट होते है, जिनका सिर एवं धड तो मानव का था लेकिन चेहरा एवं पंजे सिंह की तरह।

*"कृतेतु नरसिंहभूत, त्रेतायम रघु नंदनः।
द्वापरे वासुदेवस्य, कुलौ वेंकट नायकः।।*

पुराणोक्ति के अनुसार कृतयुग में नरसिंह स्वामी, त्रेतायुग में रघुराम, द्वापर युग में श्रीकृष्ण कलियुग में श्री वेंकटेश्वर स्वामी साक्षात परब्रह्म है। भगवान महाविष्णु के दशवतरों में चौथा अवतार नरसिंह स्वामी है। नरसिंह स्वामी अत्यंत महिमान्वित भगवान है।

भक्ति की परम पवित्र काल मध्ययुग में महाराजाओं के समय में तिरुमल तिरुपति के बाह्यांचल में अनेक नरसिंह स्वामी जी के मंदिर स्थिर रूप से बसे है। परम पवित्र पुण्य क्षेत्र तिरुमल के उत्तर माडा वीथी में भगवान श्री लक्ष्मी नरसिंह स्वामी का मंदिर उपस्थित हुआ है। उस पावन पूज्य मंदिर में विशाल मुखमंडप, अर्थमंडप, अंतरालय के साथ गर्भ मंदिर में दक्षिण के अभिमुख में भगवान श्री लक्ष्मी नरसिंह स्वामी

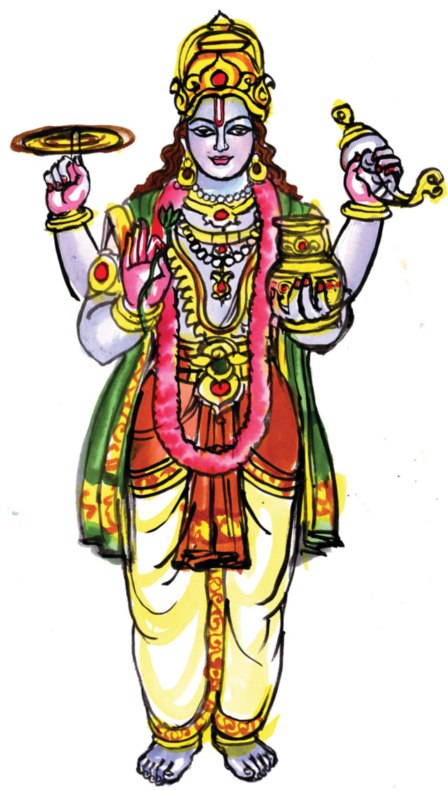

बसे हुए है। द्रविड गमन रीति में गर्भ मंदिर के ऊपर अत्यंत महिमान्वित विमान को निर्मित किया है।

इस मंदिर की मुख्य विशेषता है कि गर्भ मंदिर की दिशा में श्री लक्ष्मी हयग्रीव स्वामी, उत्तर में श्री धन्वंतरी, पूरब में श्री श्रीनिवास स्वामी प्रतिष्ठित हुए है। गर्भ मंदिर में पाँच फन के साथ महान आदिशेष फन फैलाकर है। साथ ही भगवान श्री नरसिंह स्वामी की गोदि में श्री लक्ष्मी माता जी आसीन हुई है। अत्यंत सुंदर मूलमूर्ति के दर्शन न केवल पापों से मुक्त करते है बल्कि सर्व समस्त पुण्य फल और मोक्ष प्रदान करते है। इस से अलग स्वामी की सन्निदि में गरुडालवार वेदन्तदेशीक, आदिवन शठगोपयति आदि छोटी-छोटी मूर्तियों के रुप में शुशोभित होकर सर्वपूजाओं को लेते है। आदिवन शठगोपयति और हरि संकिर्तनाचार्य ताल्लपाक अन्नमाचार्य के गुरु थे। यह सुप्रसिद्ध श्री लक्ष्मी नरसिंह स्वामी का मंदिर अहोबिल मठ के आधीन में है। अहोबिल नव नरसिंह स्वामी पर गाये-गये अन्नमाचार्य प्रसिद्ध संकिर्तन जग-प्रचलित है। तिरुमल श्री वेंकटेश्वर स्वामी के बाद बहु संख्या में गाये गये कीर्तन प्रह्लाद श्री नरसिंह पर है। अन्नमाचार्य ने भगवान बालाजी के बाद इतनी भक्ति भावना नरसिंह स्वामी पर प्रदर्शित किया है।

हर साल वैशाख महीने के शुक्ल पक्ष की चतुर्दशी तिथि में भगवान विष्णु के नरसिंह स्वामी की जयंति मनाई जाती है।

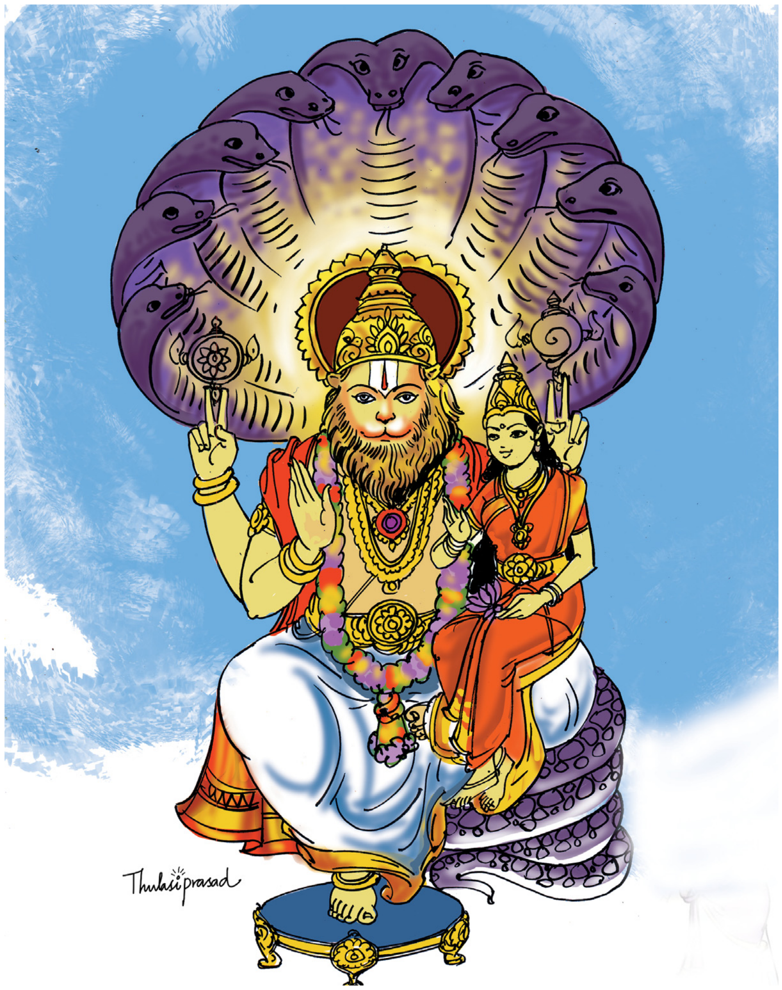

इस दिन भगवान नरसिंह स्वामी को कई प्रकार के पूजन, अर्चन करते हैं।

वैशाख शुद्ध चतुर्दशी स्वाति नक्षत्र काल में भगवान श्री लक्ष्मी नरसिंह स्वामी जयंती पवित्र तिरुमल क्षेत्र में अत्यंत शोभायमान और वैभव के साथ मनाई जाती है। भगवान अपने भक्तों के सभी कष्टों का क्षण भर में निवारण कर देते है। हमारे शास्त्र एवं पुराणों में प्रभु की महिमा से भर पडे हैं, जिन में बताया गया है कि भगवान सदा अपने भक्तों की रक्षा करते है। जब भक्त किसी दुष्ट के सताए जाने पर सच्ची भावना से प्रभु को पुकारते है तो भगवान दौड चले आते है क्यों कि भगवान तो भक्त वत्सल है, जो सदा ही अपने भक्तों के आधीन में रहते हैं।

''(ॐ) ओम जय नरसिंह हरे, प्रभु जय नरसिंह हरे।।''

भगवान लक्ष्मी नरसिंह मंदिर, कदिरी

- डॉ हेच एन गौरीराव,
मोबाइल - ९७४२४८२०००

हमारे देश में कुछ मंदिर मानव निर्मित है तो और कुछ स्वयंभू हैं। अर्थात यहाँ के भगवान की मूर्ति स्वयं आविर्भाव होता हैं। कदिरी में स्थित भगवान नरसिंह का मंदिर भी एक स्वयंभू मंदिर है।

भगवान श्री लक्ष्मी नरसिम्ह का मंदिर आंध्र प्रदेश के अनंतपुरम जिला कदिरी क्षेत्र में है। आंध्रप्रदेश के नव नरसिंह क्षेत्रों में से कदिरी नरसिम्हा क्षेत्र एक पुण्यक्षेत्र माना जाता है। यह मंदिर तिरुपति बालाजी मंदिर के समान प्रसिद्ध है। इस क्षेत्र की अनेकानेक विशेषताएँ है। यह क्षेत्र अनंतपुरम नगर से १०० किलोमीटर दूर पर है। इस मंदिर के अस्तित्व के बारे में ब्रह्मांड पुराण में, स्थल पुराण में और मंदिर के शासनों में उल्लेख प्राप्त होते हैं। ब्रह्मांड पुराण में रुद्र, नारद संवाद में कदिरी मंदिर के महत्व के बारे में वर्णन किया गया है- ''प्रथमम वेंकटचलम्, द्वितीयम् खाद्रीम्।''

इस क्षेत्र के नाम को लेकर किंवदंतियाँ भी प्रचलित है। एक मान्यता के अनुसार कदिरी नाम संस्कृत शब्द 'खदरी' से व्युत्पन्न है, जिसका अर्थ है भारतीय शहतूत (मोरिंडा सिट्रिफोलिया)। कदिरी शहर का नाम श्री नरसिंह स्वामी की प्रसिद्ध कथा से लिया गया है। कहा जाता है कि त्रेता युग से पूर्व नरसिम्हस्वामी का खदरी वृक्ष के नीचे आविर्भाव हुआ था, जिसका प्रतिष्ठापन भृगु महर्षि से हुआ था। एक और मान्यता यह है कि प्राचीन काल में इस क्षेत्र को खाद्री कहते थे। 'ख' का अर्थ है 'विष्णु का पाद' और 'अद्रि' का अर्थ है 'गिरी'। जिस पर्वत पर विष्णुपाद है वह 'खाद्रि' कहलाया, और खाद्रि बाद में कदिरी बन गया।

कदिरी क्षेत्र में महर्षि वेदव्यास राक्षसों से अपनी रक्षा के लिए आश्रय प्राप्त किए थे, और यही गुरुकुल को भी स्थापित किये थे, इस से यह जगह 'केदारण्य' भी कहा जाता है।

कदिरी क्षेत्र मैसूर संस्थान के अंतर्भाग में था, इस से अनेक कर्नाटक के लोगों का भी कुलदेवता है। पद कविता पितामह अन्नमाचार्य भी अपने कीर्तन में कदरी नरसिंह के बारे में गाया है - ''कदरी नृसिंहुडु कंभमुन वेडले। विदितमुग सेविचरो मुनुलु।''

इस मंदिर को विजयनगर साम्राट् श्री कृष्णदेवरायलु और छत्रपति शिवाजी आदि महापुरुष दर्शन किये थे।

पुराण गाथा :

कदिरि क्षेत्र में प्रह्लाद सहित लक्ष्मी नरसिंह विराजमान होने के बारे में एक पौराणिक कथा प्रचार में है। भृगु महर्षी भगवान के अनुग्रह के लिए इस क्षेत्र में तप कर रहे थे। तब भगवान, भृगु महर्षि के स्वप्न में आकर बताया- ''मैं इस क्षेत्र के पुष्करिणी में हूँ और जनकल्याण के लिए इन प्रतिमाओं को लेकर प्राण प्रतिष्ठा करना।'' भृगु महर्षि ने ऐसे ही उन प्रतिमाओं को लेकर वसंत ऋतु में प्राण प्रतिष्ठा की। वसंत ऋतु में प्रतिष्ठित होने से ये प्रतिमाएँ 'वसंत वल्लभुलु' कहे जाते हैं। माना जाता है कि स्वयं भगवान नरसिंहस्वामी ने इन प्रतिमाओं को भृगु महर्षि को सौंपा था, ताकि इनकी अर्चना वह कर सके।

एक और पौराणिक कथा इस प्रकार चलती है - राक्षस राजा हिरण्यकश्यपु भगवान विष्णु से द्वेष करके स्वयं को भगवान मानकर प्रजा को अपनी पूजा करने के लिए मजबूर करता था। स्वयं अपने पुत्र प्रह्लाद को भगवान विष्णु को भूलने के लिए नाना प्रकार से भयभीत करके मारने का भी प्रयत्न किया। परंतु प्रह्लाद ने अपने निश्चल, एकाग्र भक्ति से भगवान को प्रसन्न किया। हिरण्यकशिपु को

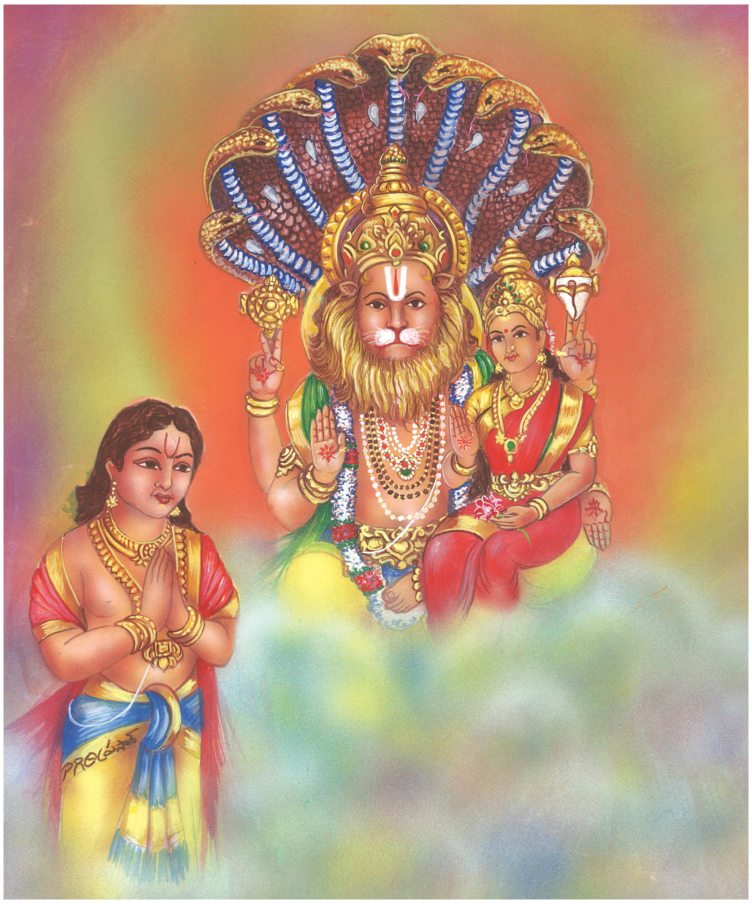

सम्हार करने के लिए भगवान विष्णु ने राजमहल के स्तंभ से नरसिंह रूप धारण करके प्रकट हुए, जिसका रूप उग्र था। संध्या के समय को देहली पर बैठकर अपने जंघा पर हिरण्यकशिपु को रख कर उसके वक्षस्थल की नाखूनों से चीर डाला। हिरण्यकशिपु के सम्हार के बाद अपने उग्र रूप से वे इधर-उधर घूमते जोर से आवाज करते हुए जंगलों में, पर्वतों में घूमने लगे। तब नरसिम्हास्वामी का आगमन कदरी क्षेत्र के एक पर्वत पर होता है। प्रह्लाद समेत अनेक देवी देवताएं, ऋषी-मुनियाँ वहाँ आकर भगवान को शांत करने के लिए अनेक रूपों से स्तोत्र किये थे। भगवान नरसिंह ने प्रसन्न होकर अपने उग्र रूप छोड़कर शांत रूप का धारण किया। जिस पर्वत पर भगवान को प्रसन्न करने के लिए अनेक स्तोत्र किए थे वह पर्वत ''स्तोत्राद्रि' कहा जाता है। तब से भगवान 'प्रह्लाद वरद नरसिंहस्वामी' कहे जाने लगे। स्तोत्राद्री की जंगली जाति चेंचुलु लोग अपने जानपद गीत में इस गाथा को गाया करते थे और वही बाद में भक्ति तत्व के गीत बन गये।

कदरी नंरसिंहस्वामी अन्य नामों से भी पुकारे जाते हैं। उनको 'काटमरायुडु' भी कहते हैं। 'काटमा' का अर्थ है 'जंगल', 'रायडू' का अर्थ है 'राजा'। जंगल का राजा सिंह होता है। सिंह जैसे सिर होने से नरसिंह को 'काटमरायडु' भी कहते है। इनका एक और नाम है 'बेट्रायस्वामी देवडु'।

चारित्रिक आधार :

१० वीं शताब्दी में पालेगार रंगनायकुलु की गायें कदरी वृक्ष के नीचे स्थित सालिग्राम को अपने दूध से अभिषेक करते थे। इस से रंगनायकुलु को सकल ऐश्वर्य प्राप्त हुए थे। इसके बाद नरसिम्हा स्वामी स्वप्न में आकर गर्भगृह निर्माण के लिए आदेश दिए थे, इस

से भक्ति श्रद्धा से आलय निर्माण रंगनायकुलु ने करवाया था।

मंदिर का निर्माण या वास्तु :

इस अद्भुत मंदिर का निर्माण वास्तु के अनुसार है; शिल्पा संपदा द्राविड विजयनगर शैली के समान है।

यह मंदिर २१/२ एकड़ स्थल में निर्मित किया गया है। यह मंदिर ७०० वर्ष पुराना है। माना जाता है कि इस मंदिर का निर्माण २३ सदी से पूर्व हुआ था।

चारित्रिक आधार यह दिखाता है कि इस मंदिर की प्रथम दशा को कंपरायलु ने १३५३ सदी को पूर्ण किया था।

दूसरी दशा को हरिहररायलु ने १३८६ - १४१८ के बीच पूर्ण किया था।

तीसरी दशा को श्री कृष्णदेवरायलु ने १५०९-१५२९ के बीच निर्माण किया था।

विजयनगर सामाज्य के राजाओं ने इस मंदिर के निर्माण तथा विकास के लिए प्रत्येक श्रद्धा दिखाई। मुख्य मंदिर में गर्भगृह, अंतरालयम, प्रदक्षिणा मंटप, मुखमंटपम, अर्थमंटपम, रंग मंटपम आदि प्रमुख रुप से दिखाई पड़ते हैं। यह मंदिर ऊंचे प्राकारों से विशाल आवरण में निर्मित है। प्रधान आलय के सामने प्रांगण में ध्वज स्तंभ दिखाई पड़ता है, यह पंच लोहों से निर्मित है। शिला स्तंभ (ध्वज स्तंभ) की विशेषता है, तथा आश्चर्य की बात यह है कि इस को बुनियादि पर न होकर, एक शिला पर स्थापित किया गया है। रंग मंडप में स्थित चार स्तंभों पर शिल्पकला अत्यंत सुंदर है, तथा यहाँ के रंगीन चित्र शताब्दियों पूर्व है, इस से थोड़ा फीका होने पर भी अत्यंत रमणीय दिखाई पड़ते हैं यह उस समय के राजाओं के सांस्कृतिक शिल्पकला की अभिरुचि को दर्शाता है। भगवान के सम्मुख गरुडाल्वार का मंदिर है। गर्भ गृह के दोनों ओर जय, विजय के बड़े शिला मूर्तियां है। गर्भ गृह में प्रह्लाद समेत नरसिम्हा स्वामी का दिव्य मंगल मूर्ति है। गर्भगृह के दाई ओर वसंत वल्लभराया का उत्सव मूर्तियाँ दिखाई पड़ते हैं। इन मूर्तियों की जो शोभा है, वह अन्य किसी मंदिर के मूर्तियों में नहीं दिखाई पड़ता है। प्रह्लाद वरद लक्ष्मी नरसिम्हा कहते हुए भक्त स्वामी को प्रणाम करते हैं अर्चना करवाते हैं नरसिम्हा स्वामी के समीप प्रणाम करते हुए प्रह्लाद का मूर्ति दिखाई पड़ता है। स्वामी के दर्शन के बाद भक्त गर्भगृह के दाई ओर माता अमृतावल्ली तथा आंडाल अम्मा का दिव्या दर्शन करते हैं। यहाँ प्रधान द्वार के बाहर चंडी- प्रचंडी माताओं का शिला विग्रह हैं। माता आंडल के बारे में ब्रह्मांड पुराण में उल्लेख मिलता है।

आलय के प्रांगण में बाई ओर श्रीवारी कल्याण कट्टा है, जहाँ भक्त शिरो मुंडन करवाके, अपने केश को भगवान को समर्पित करके आलय के समीप स्थित भृगुतीर्थ को नहाने जाते हैं; अथवा आलय प्रांगण में स्नानगृह और शौचालय भी है, वहाँ स्नानादि करके भगवान का दर्शन करते हैं।

आलय प्रांगण में बाई ओर कोदंडं रामालयम दिखाई पड़ता है। इसके समीप नागुला कट्टा है। भक्तों का विश्वास है कि नाग देवता संतान प्राप्ति कराती है भक्त यहाँ शमी वृक्ष, राम जप स्तूप का दर्शन करके पुनीत हो जाते है। इस प्रांगण के दाई और गोविंदराजस्वामी का मंदिर है, उसके बाद क्षेत्र पालक चेन्नकेश्वर स्वामी मंदिर है और समीप कोट्टयम मंटप है। यहाँ स्वामी का कल्याणोत्सव मनाया जाता है। इस मंदिर के ४ महान द्वार तथा बृहद गोपुर है। ये द्वार भी इस मंदिर की विशेषताओं में से एक है।

इस मंदिर से ३ किलोमीटर दूर पर कादरी कोंडा (पर्वत) है। यहीं उस समय के स्तोत्राद्री पर्वत है। यहाँ लक्ष्मी नरसिम्हा स्वामी का दर्शन प्राप्त कर सकते हैं। यहाँ जंगल में एक शिला पर स्वामी के पाद चिह्न देखने को मिलते हैं। इन्हीं पाद चिह्नों के कारण से इस क्षेत्र का नाम खाद्री पड़ा। इनके दर्शन के बाद सप्तर्षियों के तपोभूमि पहुँचते हैं। एक शिला के नीचे गुफा में सप्त ऋषियाँ तप करते थे। गणेश, सत्यनारायण स्वामी और नवग्रह देवताओं के दर्शन कर सकते हैं।

मंदिर से संबंधित कई क्षेत्र कदिरी के आस पास है वे ये है - भृगुतीर्थ (कोनेरु या पुष्करिणी), द्रौपदी तीर्थ, कुंती तीर्थ, पांडव तीर्थ और व्यास तीर्थ।

उत्सव :

हर साल नरसिम्हा स्वामी का ब्रह्मोत्सव फाल्गुन मास में १४ दिन मनाए जाते हैं। ब्रह्म उत्सव के पांचवाँ दिन पूर्णिमा है, इसलिए यह दिन 'कदिरी पूर्णिमा' भी कहा जाता हैं। पुण्यवचन, बलिहरण, कुंभ आरती के बाद रथोत्सव वैभवता के साथ मनाया जाता है। ब्रह्मोत्सव में दूसरे दिन भगवान का कल्याणोत्सव मनाया जाता है। हजारों संख्या में भक्त कल्याणोत्सव के दर्शन से पुनीत हो जाते हैं। पूरा प्रांगण गोविंद नामस्मरण से प्रतिध्वनित हो उठता है। ब्रह्मोत्सव के १५ दिन याज्ञशाला से ही भगवान भक्तों को दर्शन भाग्य दिलाता है। तीसरे दिन हंस वाहन पर दर्शन देता है। ब्रह्मोत्सव में ब्रह्म गरुड़ सेवा और ब्रह्मा रथोत्सव अत्यंत रमणीय तथा वैभवता के साथ आचारण किया जाता है।

ब्रह्मा के आधीन में मनाए जाने वाले यह उत्सव ब्रह्मा महोत्सव कहा जाता है।

''डोलायमानम गोविंद मध्यस्थम मधुसूदनम रथस्थम् केशवम दृष्टवा पुनर्जन्म न विद्यते।''

अर्थात रथ में गोविंद को देखने के बाद पुनर्जन्म नहीं होता है। अखिल कोटी ब्रह्मांड नायक नरसिम्हस्वामी श्रीदेवी भूदेवी के साथ विशेष रूप से अलंकृत रथ में विराजमान होकर तिरु माडा वीधियों (गलियों) में विहार करते है। इस रथ को खींचने के लिए लाखों लोग अपनी भुजाओं पर रस्सी को रख के खींचते हैं, और स्वामी अनुग्रह के पात्र होते हैं। इस ब्रह्मोत्सव के समय लक्ष्मी नरसिम्हा का दर्शन मोक्ष का सोपान है। इस से भक्त गण भक्ति श्रद्धा के साथ नरसिम्हा स्वामी का दर्शन करते हैं। इस क्षेत्र में ब्रह्मोत्सव के समय की यह विशेषता है कि रथोत्सव के समय लोग भगवान के ऊपर दौना और काली मिर्च को समर्पित करते है, और जो कुछ नीचे गिर जाता है उसको फिर से प्रसाद के रूप में स्वीकार करते हैं। ऐसे करने से, लोगों का मानना है कि उनके मानसिक तथा शारीरिक रोगों से मुक्ति प्राप्त किया जा सकता हैं। नरसिम्ह स्वामी का रथ बहुत बड़ा और भारी है। इसका भार ५४० टन है। यह भारी रथ देश में तीसरे स्थान में है। इस को खींचने के लिए लाखों में लोग जमा होते हैं। इस रथोत्सव में भाग लेने के लिए आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटका और तमिलनाडु से भक्त आते हैं।

इस मंदिर में तथा ब्रह्मोत्सव के समय समरसता का पालन किया जाता है। यहाँ लोग अपना जाति मत आदि भूल कर उत्सव में भाग लेते हैं, तथा इस मंदिर के उत्सवों में मुसलमान लोग भी नियमों का पालन करते हुए भाग लेते हैं। गोविंद नाम स्मरण से यह क्षेत्र गूंज उठता है - ''कदिरी नरसिंह स्वामी गोविंदा'', ''नालुगु गोपुरालवाड़ा गोविंदा'' कहते हुए जुलूस आगे बढ़ती हैं।

संक्रांति के समय स्वामी के उत्सव करते हैं। ऐसा माना जाता है कि संक्रांति पर्व के अंत में आने वाले आचरण 'परुवेट' पर्व (पशुओं का पर्व) के दिन स्वामी श्रीदेवी भूदेवी के वसंतवल्लभरायुडु कदरी पर्वत को आते है। इसी को रथोत्सव कहते हैं। इसका बहुत बड़ा महत्व है।

हर वर्ष इस मंदिर में नरसिंह जयंती, वैशाख शुद्ध चतुर्दशी, मल्लेपूल तिरुनाल्लु, वैशाख शुद्ध पौर्णिम, चिंतपूल तिरुनाल्लु, आषाढ़ पूर्णिमा, श्रावण बहुल नवमी, दशहरा और वैकुंठ एकादशी आदि उत्सव मनाए जाते हैं।

भगवान का स्वरूप :

यहाँ भगवान पद्मासन में बैठकर हिरण्यकशिपु का संहार करके, उसके आंतडी को माला के रूप में पहन कर दिखाई पड़ते हैं। अष्टभुज नरसिम्हा स्वामी की मूर्ति चार हाथों से हिरण्यकश्यप का वध कर रहे हैं, और उसके आंतडी को गले में माला के रूप में पहने हुए दिखाई पड़ते हैं। इस से नरसिम्हा सहस्रनाम में स्तुति की गई है -

''रक्त माला विभूषणाय नमः औम्, रक्तगंधानुलेपनाय नमः ओम।''

बाकी चार हाथों में शंख, चक्र, गदा और खड्ग को धारण किए हुए स्वामी दर्शन देते हैं।

स्वामी के समीप प्रह्लाद का शिला विग्रह दिखाई पड़ता है। यह प्रह्लाद का मूर्ति ही इस मंदिर की विशेषता है। देश में अन्य किसी मंदिर में प्रह्लाद की मूर्ति नहीं दिखाई पड़ती है। यह'' न भूतो ना भविष्यति है।''

पूजा विधि :

वैखानस आगम शास्त्र के अनुसार प्रतिदिन यहाँ भगवान की पूजादि किए जाते हैं। वैखानस के वंशस्थ यहाँ पूजा करते हैं। अब यहाँ इस वंश के ११ वीं पीढ़ी पूजा कर रहे हैं।

शनिवार और आदित्यवार को अधिक संख्या में भक्त, भगवान का दर्शन करने आते हैं।

प्रतिदिन यहाँ भगवान को अभिषेक किया जाता है, नैवेद्य अर्पित किया जाता है, तथा आरती उतारी जाती है। विशेष दिनों में भगवान का विशेष अलंकार किया जाता है यहाँ की एक विशेषता है कि भगवान के अभिषेक के बाद भगवान की मूर्ति से स्वेद निकलता है। विशेष दिनों में यज्ञशाला में यज्ञादि कर्म किए जाते हैं।

मंदिर में सुबह ५:०० बजे से दोपहर १:३० तक शाम को ५:०० से रात को ८:३० तक भक्त जन भगवान का दर्शन कर सकते हैं।

इस मंदिर में आने वाले भक्तों के लिए मंदिर की ओर से रहने के लिए कमरे और भोजन व्यवस्था भी है।

श्रीलक्ष्मी नृसिंहकरावलंब स्तोत्र

(भावार्थ सहित)

तेलुगु - विद्वान, डॉ.पमिडिकाल्व चेन्चुसुब्बय्या
हिन्दी अनुवाद : डॉ.एम.रजनी

आदिशंकर जी से विरचित श्रीलक्ष्मीनृसिंहकरावलंब स्तोत्र श्री नृसिंहजयंती के संदर्भ में 'सप्तगिरि' पाठकों केलिए :

हर दिन सबेरे शाम भक्ति से पठन करनेवाले भक्तों के कष्टनष्ट दूर होकर सुखशांति प्राप्त होगा।

श्लो।। श्रीमत्पयोनिधिनिकेतन चक्रपाणे
भोगीन्द्रभोगमणिराजितपुण्यमूर्ते।
योगीश शाश्वत शरण्य भवाब्धिपोत
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १

क्षीर सागर में निवास करने वाला! सुदर्शनचक्र को हाथ में धारण करनेवाला! आदिशेष के फणों पर मणि कांतियों से प्रकाशित होनेवाला! योगियों केलिए भगवान हो! शाश्वत से रहनेवाला! दीन बन्धु! तुम संसार सागर का जहाज हो! हे लक्ष्मी नृसिंह स्वामी! मुझे सहारा दो!

श्लो।। ब्रह्मेन्द्ररुद्रमरुदर्ककिरीटकोटि-
संघट्टिताङ्घ्रिकमलामलकान्तिकान्त।
लक्ष्मीलसत्कुचसरोरुहराजहंस
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। २

ब्रह्म, इन्द्र, शिव, वायु, सूर्य इनके किरीटाग्र और चरण कमलों के निर्मल कांति से प्रकाशित मनोहर रूपवाला! लक्ष्मीदेवी के सुन्दर पद्मरूपी वक्ष स्थल पर राजहंस की भाँति विराजमान हो! हे लक्ष्मी नृसिंहा मूझे सहारा दो!

श्लो।। संसारसागरविशालकराळकाम-
नक्रग्रहग्रसननिग्रहविग्रहस्य।
मग्नस्य रागलसदूर्मिनिपीडितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। ३

हे लक्ष्मीनृसिंह! संसार सागर के महा भयंकर काम रूपी मगर के मुहँ में गिरकर, संसार संबंधि चिंताओं रूपी लहरों से प्रताडित बाधाओं में गिरा हुआ मुझे सहारा देकर रक्षा करो।

श्लो।। संसारघोरगहने चरतो मुरारे
मारोग्रभीकरमृगप्रवरार्दितस्य।
आर्तस्य मत्सरनिदाघनिपीडितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ।। ४

हे मुरारी! नृसिंहस्वामी! संसार रूपी भयंकर जंगल में धूमते हुए मन्मथ रूपी क्रूर मृग के मुहँ में गिरकर दु:खित हूँ। क्रोध रूपी ग्रीष्म से तडपता हूँ। मुझे सहारा देकर रक्षा करो।

श्लो।। संसारकूपमतिघोरमगाधमूलं
संप्राप्य दुःखशतसर्पसमाकुलस्य।
दीनस्य देव कृपया शरणागतस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ।। ५

हे लक्ष्मीनृसिंह देव! बहुत ही भयंकर संसार रूपी कुआ में गिर कर, सैकडों विषसपौं से लिपटकर पीडित, दीन स्थिति में हूँ। मुझ पर कृपा दिखा कर रक्षा करो।

श्लो।। संसारभीकरकरीन्द्रकराभिघात-
निष्पीड्यमानवपुषस्सकलार्दितस्य।
प्राणप्रयाणभवभीतिसमाकुलस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम् ।। ६

हे लक्ष्मीनृसिंह देव! मेरा शरीर संसार रूपी भयंकर हाथी की सूँड के मारों से घायल हुआ है। तरह तरह के कष्टों को झेला हूँ। जान जाने के डर से हूँ। मुझ पर कृपा दृष्टि डालकर सहारा दो।

श्लो।। संसारसर्पविषदुष्टभयोग्रतीव्र-
दंष्ट्राकराळविषदग्धविनष्टमूर्ते।
नागारिवाहन सुधाब्धिनिवास शौरे
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। ७

हे गरुडवाहना! क्षीर सागर शयना! शौरी! लक्ष्मीनृसिंह स्वामी! संसार रूपी सांप के तेज, तीक्ष्ण नुकीले तीव्र विष के प्रभाव से मेरा शरीर नष्ट हुआ। मुझ पर कृपा करके, सहारा देकर मुझे बचाओ।

श्लो।। संसारजालपतितस्य जगन्निवास
सर्वेन्द्रियार्थबडिशस्थझषात्मनश्च।
प्रोत्तंभितप्रचुरतालुकमस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। ८

हे जगन्निवासा, संसार रूपी जाल में फंसकर स्त्री भोगों में डूबकर, जाल में फँसा मछली की भाँति तडप रहा हूँ। ऐसी दयनीय स्थिति को देखकर मुझ पर कृपा दृष्टि डाल कर, मेरी रक्षा करो।

श्लो।। संसारवृक्षमघबीजमनन्तकर्म-
शाखायुतं करणपत्रमनङ्गपुष्पम्।
आरुह्य दुःखजलधौ पतितो दयालो
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। ९

हे दयाहृदय! लक्ष्मीनृसिंह स्वामी! पाप रूपी बींज से उत्पन्न हुआ अनंतकर्म रूपी सींगें, इंद्रिय जैसा पत्ते, मन्मथ रूपी फूल से युक्त इस संसार रूपी पेड पर चढ कर दुःख सागर में गिर गया। मुझे सहारा देकर, मेरी रक्षा करो।

श्लो।। संसारदावदहनाकुलभीकरोग्र-
ज्वालावलीभिरभिदग्धतनूरुहस्य।
त्वत्पादपद्मसरसीरुहमस्तकस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १०

हे लक्ष्मीनृसिंह स्वामी! संसार रूपी दावाग्नि ज्वालाएँ चारों ओर फैल कर मुझे जला रहा है। बालें झुलस गये तुम्हारे चरणकमलों पर शिर रखा हूँ। इस आग को बुजा कर, मुझे सहारा देकर मेरी रक्षा करो।

श्लो।। संसारसागरनिमज्जनमुह्यमानं
दीनं विलोकय विभो करुणानिधे माम्।
प्रह्लादखेदपरिहार परावतार
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। ११

हे प्रभू! दयानिधि! प्रह्लाद के दुःखों को दूर करने वाला! श्रेष्ठ अवतार धारण करने वाला! लक्ष्मीनृसिंहा! संसार सागर में गिरकर घुटन होनेवाला दीन हूँ। मुझ पर कृपा दृष्टि डालो सहारा देकर, बचाओ।

श्लो।। संसारयूथगजसंहतिसिंह दंष्ट्रा
भीतस्य दुष्टमतिदैत्यभयङ्करेण।
प्राणप्रयाणभवभीतिनिवारणेन
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १२

संसार रूपी हाथियों के झुण्ड को हिंसा करने वाले सिंह रूपी लक्ष्मीनृसिंह स्वामी! दृष्ट राक्षसों के दिलों में डर उत्पन्न करनेवाले। जन्म-मृत्य से संबंधित डर का निवारण करनेवाले तुम्हारे नुकीले दाँतों से संसार से धबरा हुआ मुझे सहारा दो।

श्लो।। संसारयोगिसकलेप्सितनित्यकर्म
संप्राप्य दुःखसकलेन्द्रिय मृत्युनाश।
संकल्प सिन्धुतनयाकुचकुङ्कुमाङ्क
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १३

हे लक्ष्मी नृसिंहस्वामी! संसार संबंधों से सकल इच्छाओं से उत्पन्न कर्म बंधनों से बना दुःखों, इंद्रियार्थ, मृत्यू आदि को नाश करनेवाले दिव्य संकल्पवान हो। ऐसा योगी और भोगी हो। तुम मुझे सहारा देकर, रक्षा करो।

श्लो।। बध्वा कलैर्यमभटा बहुभर्त्सयन्ति
कर्षन्ति यत्र पथि पाशशतैर्यदाऽहम्।
एकाकिनं परवशं चकितं दयालो
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १४

दयामय! लक्ष्मीनृसिंह स्वामी! वे होश में हूँ। अकेला डरा हूँ। मेरी इस हालत को देखकर जब यमदूत आयेंगे तब वहाँ प्रत्यक्ष होकर मुझे सहारा देकर, मेरी रक्षा करो।

श्लो।। अन्धस्य मे हतविवेकमहाधनस्य
चौरैर्महाबलिभिरिन्द्रियनामधेयैः।
मोहान्धकारकुहरे विनिपातितस्य
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १५

हे लक्ष्मीनृसिंह देवा! कामादियों के कारण अंधा बनने से महाबलवान इंद्रियाँ रूपी चोर मेरा विवेक रूपी धन को चुराकर, मुझे अज्ञान अंधकार में ढकेल दिया। इसलिए हे भगवान सहारा देकर मेरी रक्षा करो।

श्लो।। लक्ष्मीपते कमलनाभ सुरेश विष्णो
यज्ञेश यज्ञ मधुसूधन विश्वरूप।
ब्रह्मण्य केशव जनार्दन वासुदेव
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १६

हे लक्ष्मीनृसिंह पद्मनाभा! देवदेवा! सर्वव्यापक! यज्ञ पुरुषा! यज्ञरूपा! मधुसुदना! विश्वरूपा! ब्राह्मणक्रिया! केशव! जनार्दन! वासुदेव! लक्ष्मीनृसिंह! मुझे सहारा दो।

श्लो।। प्रह्लादनारदपराशरपुण्डरीक-
व्यासाम्बरीशशुकशौनकहृन्निवास।
भक्तानुरक्तपरिपालनपारिजात
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १७

प्रह्लाद, नारद, पराशर, पुण्डरीक, व्यास, अम्बरीश-शुक, शौनकादि परम भागवतों के हृदयों में निवास करनेवाला! अपने प्रिय भक्तों की रक्षा करने में पारिजात कल्पवृक्ष की भाँति हो! हे लक्ष्मी नृसिंह! मुझे सहारा दो।

श्लो।। एकेन चक्रमपरेण करेण शङ्ख-
मन्येन सिन्धुतनयामवलम्ब्य तिष्ठन्।
वामेतरेण वरदाभयहस्तमुद्रं
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १८

हे लक्ष्मीनृसिंहा! एक दाये हाथ में सुदर्शन चक्र, बाये हाथ में पांचजन्य शंख को, दूसरे दाये हाथ में अभयवरप्रदान मुद्रा, बाये हाथ में लक्ष्मी देवी के समान दिव्य रूप से साक्षत्कार करनेवाले, सहारा देकर मेरी रक्षा करो।

श्लो।। आद्यन्तशून्यमजमव्ययमप्रमेयम्
आदित्यरुद्रनिगमादिनुतप्रभावम्।
त्वाम्बोधिजास्यमधुलोलुपमत्तभृङ्गं
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। १९

आद्यन्तरहित, जन्म-मरण से परे, विनाश रहित, अनगिनत, सूर्य, रुद्र, वेदों आदि लोगों से स्तुति के लायक हो, लक्ष्मीदेवी मुख कमल से शहद को चूसनेवाला भ्रमर बने हे लक्ष्मीनृसिंहा! मैं तुम्हारी सेवा करता हूँ मुझे सहारा देकर मेरी रक्षा करो।

श्लो।। वाराह राम नरसिंह रमादिकान्त
क्रीडाविलोल विधिशूलिसुरप्रवन्द्य।
हंसात्मकं परमहंसविहारलील
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। २०

परमहंस से पूर्ण सभी योगियों में विहारशील करनेवाले ओ लक्ष्मीनृसिंह! हे भगवान तुम तो वराह, राम, नृसिंहादि रूपों को धारण किए हो। लक्ष्मी आदि स्त्रीयों के साथ रास क्रीडा खेले थे। ब्रह्मा, शिव आदि देवताओं ने तुम्हारी वंदना किये। इसलिए हंसस्वरूप समान तुम्हारी हाथ देकर मेरी रक्षा कीजिए।

श्लो।। माता नृसिंहश्च पिता नृसिंहः
भ्राता नृसिंहश्च सखा नृसिंहः।
विद्या नृसिंहो द्रविणं नृसिंहः
स्वामी नृसिंहः सकलं नृसिंहः।। २१

मेरेलिए तो माता-पिता-भ्राता-सखा-विद्या-धन रक्षक-जीवन सर्वस्व श्री लक्ष्मीनृसिंह स्वामी ही है।

श्लो।। प्रह्लादमानससरोजविहारभृङ्ग
गङ्गातरङ्गधवलाङ्गरमास्थिताङ्ग।
शृङ्गारसंगरकिरीटलसद्वराङ्ग
लक्ष्मीनृसिंह मम देहि करावलम्बम्।। २२

हे लक्ष्मी नृसिंहा! प्रह्लाद के मन में भ्रमर की भाँति विहार करनेवाले! गंगातरंग की भाँति सफेद वर्ण के हो! लक्ष्मी भगवान केलिए निवास योग्य तुम्हार शरीर हो! सुन्दर और प्रकाशमान मुकुट को शिर पर धारण करनेवाले हे भगवान मुझे तुम्हारा सहारा दीजिए।

श्लो।। श्रीशङ्कराचार्यरचितं सततं मनुष्यः
स्तोत्रं पठेदिह तु सर्वगुणप्रसन्नम्।
सद्यो विमुक्तकलुषो मुनिवर्यगण्यो
लक्ष्मीपतेः पदमुपैति स निर्मलात्मा।। २३

श्री शंकराचार्य से विरचित दिव्य महिम से संपन्न इस स्त्रोत्र को हमेशा पठन (पारायण करने से) सर्व पापों से मुक्ति पाकर मुनियों की प्रशंसा पाकर निर्मल मन से पुनर्जन्म रहित शाशवित विष्णु स्थान को प्राप्त करेगा।

श्लो।। एतन्मयार्जितवपुः प्रचुरप्रवाह-
मग्नार्तमर्त्यनिवहस्य करावलम्बम्।
लक्ष्मीनृसिंहचरणाब्जमधुव्रतेन
स्तोत्रं कृतं शुभकरं भुवि शङ्करेण।। २४

श्री शंकराचार्य से विरचित कर्म बंधनों से लिपट कर, संसार सागर में डूब कर दुःखित मानवों को शुभ प्रदान करनेवाला इस स्तोत्र को, लक्ष्मी नृसिंह पादपद्मों में समर्पित करता हूँ।

श्लो।। श्रीमन्नृसिंहविभवे गरुडध्वजाय
तापत्रयोपशमनाय भवौषधाय।
तृष्णादिवृश्चिकजलाग्निभुजङ्गरोग-
क्लेशव्ययाय हरये गुरवे नमस्ते।। २५

हे प्रभु, गरुडध्वज तापत्रयनिवारक, संसार केलिए औषध के समान हो, भूख, प्यास, भिक्षु पानी, आग, सर्पों, रोगों से संबंधित बाधाओं को नाशकरनेवाले, समस्त पापों का हरण करनेवाले, गुरु तुल्य हे लक्ष्मी नृसिंह स्वामी! तुम्हें प्रणाम!

(गतांक से)

श्री वेंकटेश सुप्रभात

स्तोत्र रचना - श्री प्रतिवादि भयंकर अण्णा स्वामीजी

व्याख्या - श्री यू.वी.पी.बी.श्रीनिवासाचार्यजी

मोबाइल - ९३६४३२४८४४

श्री भूमिनायक दयादिगुणामृताब्धे
देवाधिदेव जगदेकशरण्यमूर्ते।
श्रीमन्ननन्तगरुडादिभिरर्चितांघ्रे
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२१॥

पदार्थ -

हे श्री भूमिनायक - लक्ष्मीजी तथा भूमिदेवी के पते, दया आदि गुण अमृत अब्धे - दया आदि गुण रूप अमृत के जन्म स्थान समुद्र,

देव अधिदेव - देवों के भी श्रेष्ठ देव,

जगत् एक शरण्य मूर्ते - जगत के एकमात्र शरण्य श्री विग्रहवाले श्रीमन् - सम्पन्न,

अनन्त गरुड आदिभिः - आदिशेष गरुड आदि से,

अर्चित अंघ्रे - पूजित चरणवाले, श्री वेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - श्रीदेवी व भूदेवी के पति, दया आदि गुणों के सागर देवदेव, जगत के समान रहित (बेजोड) शरण (आश्रय), आदिशेष आदि नित्य सूरियों से पूजित चरणवाले, संपत्तियों से समृद्ध (होकर) श्रीवेंकटाद्रि में वास करने वाले भगवान् आप को यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - यह श्लोक द्वयमंत्र के अर्थों का विवरण करता है। श्री भूमिनायक इस शब्द से द्वयमंत्र के पूर्व खंड के ''श्रीमत्'' पद का अर्थ ''दयादिगुणामृताब्धे' इस शब्द से ''श्रीमत्'' पद से सूचित लक्ष्मीजी के संबंध से स्वातन्त्र्य के दब जाने पर उत्थित दया, वात्सल्य, सौशील्य, सौलभ्य आदि गुणवान है। इस अर्थ को बताने वाला नारायण शब्दार्थ, 'जगदेक शरण्यमूर्ते' इस पद में रहे 'मूर्ति' शब्द से शरीर को बताते हुए शरीर के एकदेश चरण को बताने के माध्यम से चरण शब्दार्थ को (उपलक्षण मर्यादया मूर्तिशब्देन चरणयोः द्योतनं), इसी शब्द से शरणवरण योग्य मूर्तिमत्ता के कहने से (आर्थतया) 'शरणं प्रपद्ये' का अर्थ, उत्तरखण्ड के ''श्रीमन्न्'' शब्द श्रीमत्पदार्थ दिव्यदम्पतित्व को 'देवाधिदेव' यह पद 'देवादिसकलशेषित्व (नाथत्व)' रूप नारायण शब्दार्थ, 'अनन्तगरुडादिभिरर्चितांघ्रे' इस में बताये अर्चन से चतुर्थी विभक्ति के अर्थ कैंकर्य को, 'श्री वेंकटाचलपते' पापों को दूर करना (निवारण) इस अर्थ को बताने वाले 'वेंकट' शब्द से कैंकर्य के बाधकों को निवारण करना इस अर्थ को बताने वाला नमश्शब्दार्थ,

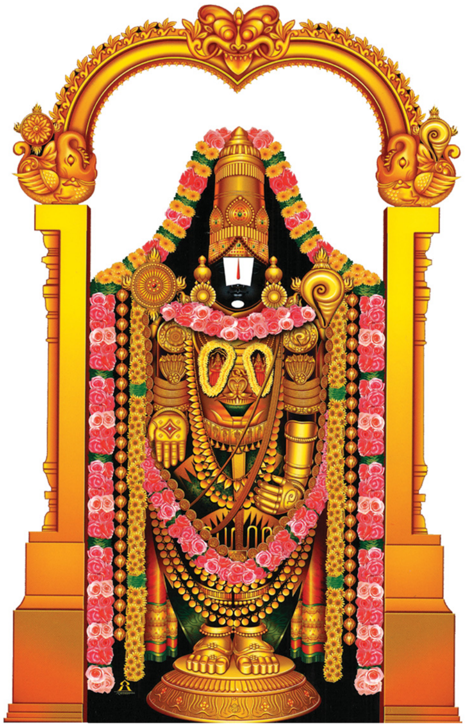

इस प्रकार द्वयार्थ को यह श्लोक बताता है। श्रीवेंकटेशश्चासौ अचलपतिश्च इस प्रकार के समास से यहाँ 'वेंकट' शब्द भगवान को बताता है। ''धामाश्रयन्ति तव वेंकट सुप्रभातम्'' (श्री, वें, सु. २७) यहाँ 'वेंकट' शब्द 'पर्वत' को न बताकर पर्वत के स्वामी 'भगवान' को ही बताता है। यहाँ भी वैसा ही भगवान को बताता है।

श्री पद्मनाभ पुरुषोत्तम वासुदेव
वैकुण्ठ माधव जनार्दन चक्रपाणे।
श्रीवत्सचिन्ह शरणागतपरिजात।
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२२॥

पदार्थ -

श्री पद्मनाभ - कमल पुष्प को नाभी में रखने वाले,

पुरुषोत्तम - पुरुषों में श्रेष्ठ,

वासुदेव - सभी जगह पूर्णतया विराजमान,

वैकुण्ठ - वैकुण्ठ,

माधव - लक्ष्मी के नाथ,

जन अर्दन - दृष्टजनों की हिंसा करने वाले,

चक्रपाणे - चक्रायुधकर,

श्रीवत्स चिन्ह - (वक्षःस्थल पर) श्रीवत्स नामक चिन्ह वाले,

शरणागत पारिजात - शरण में आने वालों को पारिजात (वृक्ष) जैसा सब को देने वाले,

श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - वैकुण्ठ में वास करने वाले, लक्ष्मीनाथ, पुरुषोत्तम, नाभिकमल में ब्रह्मा को सृष्टि करने वाले, सर्वत्र व्यापक, श्रीवत्स चिन्ह, चक्रायुध से असुरों का संहार कर, शरणागतों को वांछित फल देने वाले श्रीवेंकटाद्रि के नाथ आप को यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - भगवान के सभी वैभव इस श्लोक में कहा जाता है। श्रीपद्मनाभ शब्द से नाभीकमल में ब्रह्मा को उनके द्वारा लोकों को सृजन करना, पुरुषोत्तम शब्द से इन लोकों में रहने वाले संसारी क्षरपुरुषों से, मुक्त अक्षरपुरुषों से भी श्रेष्ठता, वासुदेव शब्द से अपने से सृष्ट और नित्य पदार्थों में व्याप्त होने पर भी उनके दोषों से अस्पृष्ट रहना, विकुण्ठानां अयं इस व्युत्पत्तिवाले वैकुण्ठ शब्द से भगवदनुभव में बाधा रहित नित्यसूरियों का नाथ होना और वैकुण्ठ लोक के नाथ होना, श्रीवत्स चिन्ह शब्द से सुन्दर देह वाले होना, माधव शब्द से पूर्वोक्त सब को सफल बनाने वाले लक्ष्मी के पति होना, चक्रपाणे जनार्दन इस शब्दों से चक्रायुध को हाथ में धारण कर दृष्टों की हिंसा करना, शरणागत पारिजाता शब्द से पूर्वोक्तों के ठीक विपरीत शरणागतों को पारिजात जैसे, उनके वांछित ऐश्वर्य, कैवल्य कैंकर्यों को देने का स्वभाव, श्रीवेंकटेशजी के रूप में प्रकाशित होना सूचित किया गया है।

कन्दर्पदर्पहरसुन्दरदिव्यमूर्ते
कान्ताकुचाम्बुरुहकुट्मललोलदृष्टे।
कल्याणनिर्मलगुणाकर दिव्यकीर्ते
श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम् ॥२३॥

पदार्थ -

कन्दर्प दर्प हर सुन्दर दिव्य मूर्ते - मन्मथ (काम) के मद को हारने वाले, सुन्दर श्रेष्ठ दिव्य देह वाले,

कान्ता कुच अम्बरुह कुट्मल लोल दुष्टे - प्रेमी लक्ष्मीजी के तनरूप कमल में प्यार करने वाली आँखों वाले,

कल्याण निर्मल गुणाकर - मंगल, दोष रहित गुणों के निधि (खान) जैसे,

दिव्यकीर्ते - अच्छे कीर्तिवाले, श्रीवेंकटाचलपते तव सुप्रभातम्।

भावार्थ - मन्मथ (काम) आपके सौन्दर्य से मुग्ध होकर ''मैं ही अति सुन्दर हूँ'' इस अहंकार को छोड़ दिया। आप भी बड़े चाव से देख रहे अति सौन्दर्यवाली लक्ष्मीजी से उत्तेजित कल्याणगुणों को आकर होने से समरहित आप को यह सुप्रभात हो।

विशेषार्थ - इस श्लोक से प्रथमार्ध से ''साक्षान्मन्थमन्मथः'' इस श्री भागवत के (१०-३२-२) यह अर्थ सूचित है। द्वितीय अर्ध से ''युवतिश्च कुमारिणी-कुमारी रहते हुए यौवन दशा को प्राप्तवती'' ऐसे उक्त लक्ष्मीजी की दशा कही जाती है। ''युवा कुमारः'' जरा सा कुमारावस्थायुक्त होकर पूर्ण यौवन वाला ''ऐसे सूचित भगवान के अनुरूप लक्ष्मी की दशा है, यह कहा गया है। ऐसे दोनों के सौन्दर्य के कहने से भगवान के लक्ष्मीजी के साथ का भोग प्राकृत (दोषयुक्त) है। हमारे जैसा भोग हो सकता है ऐसा संदेह हो सकता है। यह संदेह तृतीय पाद के 'निर्मलगुणाकर' इस शब्द से निवारित होता है। निर्मल (दोष रहित) गुणों का भण्डार भगवान में किसी दोष का असम्भव है न? तब भगवान के लक्ष्मीजी के साथ भोग किस प्रकार का है। इस शंका का समाधान श्रीवैकुण्ठगद्य के ''श्रीमत चरणाविन्द युगलम्'' इस वाक्य खंड का विवरण देते वक्त श्रीकृष्ण पादस्वामी के श्रीमतः- भोगस्त्रोत में (भोग के बाढ़ में)

किनारे को देखने (प्राप्त करने) सहायभूत साक्षात लक्ष्मी को अपने प्रधान महिषी के रूप में प्राप्त (भगवान के) इनका यह सांसारिक भोग नहीं है। अवाप्त समस्त काम होने से आनंदमय (स्वरूप) भगवान को महिषियों के योग से होने वाले भोग क्या है? (किस स्वरूप का है)! उस में सहाय(क) होना क्या है? इसका समाधान यह है कि अपने आश्रितों का उज्ञीवन (मोक्ष को प्राप्त करना) ही भोग है। इस में पुरुषकार होकर स्थिर रह कर, मिलाने में सहायक होना है। इस विवरण से समझ सकते हैं (भोग के स्वरूप को)। अपने को दर्शन करते ही सभी लोग शरणागति करने में प्रवृत्त कराने वाला सौन्दर्यवान भगवान, महिषी की भक्ति की आरम्भ दशा में जो व्यंग्य से कुचकुटमल कही गयी है, ही मोहित होकर, उनके पुरुषकार को स्वीकार कर आश्रितों को ऐश्वर्यादि पुरुषार्थों को प्रदान करते हैं। (यह श्लोक के प्रथम दो चरणों का तात्पर्य है।) ॥२३॥

क्रमशः

(गतांक से)

श्री प्रपन्नामृतम्

(२१वाँ अध्याय)

मूल लेखक - श्री स्वामी रामनारायणाचार्यजी

प्रेषक - श्री रघुनाथदास रान्दड

मोबाइल - ९९००९२६७७३

शारदा शोकनाशक श्रीरामानुजाचार्य का श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी से मन्त्रार्थ प्राप्त करना

अपने दोनों शिष्यों के साथ आकर प्रसन्न भगवत्पाद-श्रीरामानुजाचार्य श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी को साष्टांग प्राणाम करके बैठ गये। उन्हें शिष्यों के साथ आये देखकर गोष्ठीपूर्ण स्वामीजी बोले-रामानुज! आपने मेरे कहने के अनुसार काम नहीं किया अतः गोप्यार्थ यह आप को नहीं बताया जा सकता। श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की वाणी सुनकर यतिवर श्रीरामानुजाचार्य बोले-श्रीमन्! आपने मुझे यज्ञोपवीत और त्रिदण्ड के साथ-साथ आने का आदेश दिया था ये दोनों मेरे शिष्य यज्ञोपवीत और त्रिदण्ड के प्रतीक हैं। इस पर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामी जी बोले- "अच्छा! तो इन में कौन त्रिदण्ड का प्रतीक है और यज्ञोपवीत का?" "श्रीमन्! श्रीदाशरथी मेरे त्रिदण्ड के तथा श्रीकुरेश मेरे यज्ञोपवीत के प्रतीक है।" श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी को उत्तर देते हुए भगवान् रामानुजाचार्य बोले। भगवत्पाद श्रीरामानुजाचार्य जी का उत्तर सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी बोले-" "अच्छा तो इन दोनों को ही तुम मन्त्र का उपदेश करना, दूसरी को नहीं। फिर भी संप्रति इन दोनों को यहीं छोड़कर तुम ही केवल मेरे साथ आओ क्यों कि तुम को छोड़कर मोक्षसाधन, मन्त्र, मन्त्रार्थ प्राप्त करने में दूसरों का अधिकार नहीं। इस प्राकर भगवान् रामानुजाचार्य जी को साथ लेकर एकान्त में उन्होंने न्यास, मुद्रा, ऋषि एवं छन्द के साथ तीन पदवाले मूलमन्त्र का अर्थ एवं ध्यान के सहित मन्त्र जप का विधान बतलाकर इस दिव्य तथा सर्वसिद्धि प्रदायक मन्त्र का निम्न महात्म्य बतलाया-मुमुक्षु श्रीवैष्णवों को भक्ति तथा ज्ञान की इच्छा से भगवान् के अत्यन्त प्रिय मूलमन्त्र को उपर्युक्त विधि से सोते बैठते चलते हर अवस्था में जपना चाहिए। कृतघ्न, ब्राह्मणघ्न आदि महान् पापी भी अष्टाक्षर मन्त्र का जप करने वाले का दर्शन करके शुद्ध हो जाते हैं। अष्टाक्षर मन्त्र का जप करने वाले भागवतोत्तम तीनों लोकों को पवित्र कर देते हैं। अष्टाक्षर मन्त्र का नित्यनुसन्धान करने वाले को प्रणाम करके जीव विष्णुलोक के भागी बनते है। अवैष्णव से मन्त्र लेने वाले शिष्य तथा शंख-चक्रांकन रहित को मन्त्र देने वाले गुरु दोनों नरकगामी होते है। इस मन्त्रराज की अवर्णनीय महिमा का पूर्णतः वर्णन असम्भव है। इस प्रकार मन्त्र की माहिमा बताकर मन्त्र के पूर्णाधिकारी सत्पात्र श्रीरामानुजाचार्य को तत्वविद्या प्रदान करके श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी अत्यधिक प्रसन्न हुए तथा उन्हें जाने की आज्ञा प्रदान की। उसी समय श्रीनृसिंह भगवान का ब्रह्मोत्सव देखने के लिए अनेक दिशाओं से श्रीगोष्ठीपुरी में वैष्णवगण पधारे हुए थे। उन्हें देखकर

दया से द्रवित होकर आधी रात के समय लोकहित के लिए भगवान् श्रीरामानुजाचार्य ने गोपुर पर चढ़कर उपर्युक्त मन्त्र का जोर-जोर से उपदेश किया जिसे चौहत्तर श्रीवैष्णवों ने सुना इस समाचार को सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी यतीन्द्रचक्रचूड़ामणि श्रीरामानुजाचार्य को बुलाकर बोले- ''आपने मेरे गोपनीय मन्त्र का साधारण लोगों में प्रकाशन करके गुरुद्रोह किया है।'' श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की वाणी सुनकर श्रीरामानुजाचार्य बोले- ''गुरुद्रोह करने से तो नरक ही न होता है? यदि केवल मेरे नरक जाने से और इस मन्त्र की महिमा से अनेक श्रीवैष्णवों का उद्धार हो जाय, वे श्रीवैकुण्ठधाम के भागी हो जायें तो मैं अपना सौभाग्य समझूँगा।

एक एव पतिष्येऽह महतो गुरूपातकात्।
सर्वे गच्छन्तु भवतां कृपया परमं पदम्।

यतिवर श्रीरामानुजाचार्य की इस वाणी को सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी सोचने लगे-अभी तक इतनी महान् भावना का उदय मेरे हृदय में नहीं हुआ है। अतिमानव श्रीरामानुजाचार्य का अवतार निश्चय ही जगत् की रक्षा के लिए हुआ है। कौन होगा जो संसार में दूसरों को मोक्ष सुख प्रदान करने के बदले स्वयं नारकीय यातना भोगने में अपना सौभाग्य समझेगा। भावभरित श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी ने यह सोचते हुए उन्हें ''मन्नाथ'' (मेरे स्वामी) नाम से सम्बोधित करके हृदय से लगा लिया और उन सभी श्रीवैष्णवों को आदेश दिया कि आप लोग आज से हम लोगों से प्रवर्तित मार्ग विशिष्टाद्वैत सिद्धान्त को श्रीरामानुज सिद्धान्त के नाम से सम्बोधित करेंगे। इस के बाद श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी वैष्णव श्री रामानुजाचार्य को ''मन्नाथ'' कहकर पुकारते हुए एकान्त में प्रसन्नतापूर्वक बोले- ''एक बार भगवान् श्रीरंगनाथ कलि के पापों से कलुषित मानवों को देखकर मुझे एकान्त में बुलाकर बोले-कि तुम कुछ लोगों को मोक्षसाधन चरमश्लोकार्थ का उपदेश कर दो'' उनका आदेश सुनकर मैं ने कहा- ''भगवान्! आज पृथ्वी में कोई भी इसका अधिकारी नहीं है। अतः किसी को भी चरम-श्लोकार्थ प्रदान करने में मैं असमर्थ हूँ क्यों कि नास्तिकों को मन्त्र प्रदान करने का आदेश शास्त्र नहीं देते।'' मेरी बात सुनकर भगवान् श्रीरंगनाथ बोले- ''अच्छा तो स्वयं मैं अधिकारी का अन्वेषण करके आप के पास भेजूँगा।'' यतिश्रेष्ठ! आज मैं उसी चरमश्लोकार्थ का उपदेश आप को दे रहा हूँ किन्तु इस गोपनीय मन्त्रार्थ का प्रकाशन मत कीजियेगा।

श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी की वाणी सुनकर श्रीरामानुजाचार्य बोले- ''मैं आप के चरणों की शपथ खाता हूँ कि आपकी आज्ञा का उल्लंघन नहीं करूँगा।'' आचार्य की बातें सुनकर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी बहुत प्रकार से मन्त्र की महिमा का वर्णन करके बोले- ''कि इस मन्त्रार्थ को सब को नहीं बतलाना चाहिए। किसी को भी बतलाने से पूर्व उसकी वर्षभर, छः महीना एक महीना या एक पक्ष तक अवश्य परीक्षा कर लेनी चाहिए। इस के बाद जिस तरह भगवान् श्रीकृष्ण ने अर्जुन को उपदेश दिया था उसी प्रकार श्रीरामानुजाचार्यजी को श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी मन्त्रोपदेश करके अपने पुत्र श्रीसौम्यनारायण को बुलाकर श्रीरामानुजाचार्यजी से समाश्रित करवाये। तदतन्तर श्रीगोष्ठीपूर्ण स्वामीजी को साष्टांग प्रणाम करके यतीन्द्र श्रीरामानुजाचार्य ने अपने शिष्यों तथा गुरुपूत्र श्रीसौम्यनारायण के साथ श्रीरंगम् आकर श्रीरंगनाथ भगवान् को सम्पूर्ण वृत्तांत बतलाकर अपने मठ में सुखपूर्वक रात्रि में शय्या ग्रहण की।

।। श्रीप्रपन्नामृत का २१वाँ अध्याय पूर्ण हुआ ।।

क्रमशः

(गतांक से)

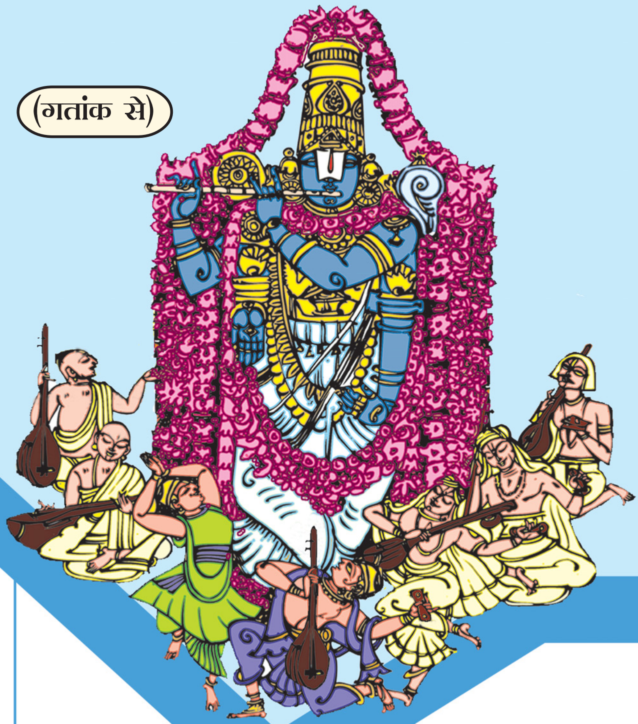

हरिदास वाङ्मय में श्रीवेंकटाचलाधीश

तेलुगु मूल - श्री एस.नागराजाचार्युलु

हिन्दी अनुवाद - डॉ.एम.आर.राजेश्वरी
मोबाइल - ९४९०९२४६१८

श्रीवादिराज स्वामी ने श्रीवेंकटेश्वरस्वामी के समक्ष दशावतार की स्तुति निम्नांकित रुप से किया -

"मन्नि सो श्रीवेंकटेश मंजुगुणिपुरनिवास।
सन्नुत सद्गुणपूर्ण सुप्रसन्न ध्यवदन।।
देशदशदिंद बंदजनरिगे मुददिंद
लेसिनवरवी वेनिरुत कावे।
भासुर मोहन वेष भानुकोटि सुप्रकाश
श्रीसतियप्राणेश श्रीश्रीनिवास।।

(देश-विदेशियों से आने वाले भक्तों को मोद के साथ श्रेष्ठ वर प्रदान करनेवाले हे देवदेव! आप निरंतर प्रकाशमान रहनेवाले सुंदरतत्व हो, सहस्त्रभनु के प्रकाश के समान भासमान रहनेवाले भगवान हो, आप लक्ष्मी के प्राणनाथ हो, श्रीनिवास हो स्वामी!)

वारिथियोलगाडिदे। गिरिय बेन्नल एत्रिदे।
भारवधरेयतंदे। दैत्यनकोंदे।
दुरुलबलियनुमेट्टि। दैत्यनृपरनुकुट्टि।
तरुणि गभयवनित्ते। तरुव कित्ते।।
पुरदनारियरनु पंयदिगेलिदे।
वरकल्कि यागि तुरगवनेरिदे।
वरद प्रसन्न हयवदन वेंकटराय।
पोरथो भेंदेदु एन्नवनन्नु।।

(उपर्युक्त पंक्तियों में कवि ने अपनी भावाभिव्यक्ति इस रुप में किया- तुम ने समुद्र में अवतार लिया मत्स्यावतार), अपने पीठ पर पर्वत को थामकर रखा (कूर्मावतार), भारवान पृथ्वी का उद्धार किया (वराहावतार), दैत्य का संहार किया (नरसिंहावतार), दुष्ट बलि पर पदाघात किया (वामनावतार), दुष्ट राजा का गर्वहरण किया (परशुरामावतार), तरुणि को अभय प्रदान किया (शबरी को अनुग्रहीत करनेवाला रामावतार), पेड़ों को समूल उखाड़ दिया (यमलार्जुन वृक्षों का उद्धार करनेवाला कृष्णवतार), पुर नारियों के उद्धारक बने (बुद्धावतार), अश्वारुढ़ी बने (कल्कि अवतार) पदकवि,दशावतारों की स्तुति करते हुए श्रीनिवास भगवान से प्रार्थना करते हैं कि हे स्वामी! मेरी भी रक्षा करो। वादिराजस्वामी की कन्नडभाषा के पदों में तात्विक चिंतन, निश्शंकात्मक सिद्धांतपरता, भावों का स्पष्ट प्रस्तुतीकरण, अपनी मनोभीष्टता को स्थापित करना, ये सभी सहज रुप से विशिष्टता प्राप्त करते हैं।

"श्रीशानीनहुदो शेषाचलवास नी नहुदो" नामक सुप्रसिद्ध पद में कवि ऐसा कहते हैं- 'हे श्रीनिवास

स्वामी!' आप श्रीश हो', यानी, आप लक्ष्मी देवी के पति हो, शेषाचल के वासी हो।

''वैकुंठो वेंकटगिरिः। वासुदेवो रमापतिः।

मायावी परमानंदं त्यक्त्वा वैकुंठमुत्तमं।

स्वामि पुष्करिणी तीर रमया सहमोदते।।

उपर्युक्त पुराणोक्ति के अनुसार, वेंकटाद्रि, भूलोक का वैकुंठ है। रमानाथ श्री महाविष्णु ही वेंकटेश्वर हैं। वैकुंठ को छोड़कर स्वामी पुष्करिणि के कूल पर लक्ष्मी समेता पर्वत पर वास करनेवाले के रुप में 'श्रीश' बननेवाले, भगवान का रुप श्रीनिवास के तत्व को प्रकट करने वाला ही है। इतना ही नहीं, इस पद के अन्य वाक्य यह भी प्रकट करते हैं कि श्री वेंकटेश्वरस्वामी और उन से पहले के अवतारों में कोई भेद अंतर नहीं है।

''शेष शयन सुरेस*वंदिता शेष जनरनु पालिसि बङ्कि*

कामु मेरिसि गंटु कट्टुव क्यासक्कि तिम्मप्प नीने।।

हे श्रीनिवास! तुम क्षेषशायी हो। इंद्रादि देवतासमूह से स्त्युत्य रहते हो। असंख्य प्राणियों के रक्षक हो। शुल्क लेनेवाले भी हो। श्रेष्ठ पदार्थों को नैवेद्य के रुप में स्वीकारनेवाले हो ये सभी श्रीनिवास तथा श्रीमन्नारायण में अभेद स्थापित करने वाले भाव हैं।

''तंदे नीनहुदो करुणा सिंधु नीनहुदो।

अंदु दुपदन नंदनेय एलेतंदु घासियमाडुतिरलु

मुदे बंदु अक्षय वेंदु सलहिद

मंदहासमुकुंदनु नेने।।

(मेरे जनक तुम ही हो, करुणा सिंधु हो। कवि कहते हैं' - 'किसी समय पूर्व, भरी सभा में जब द्रौपदी का वस्त्रापहरण हो रहा था, तब तुम श्रीकृष्ण के रुप में असंख्य वस्त्रों को उसे दिया था हे स्वामी।')

एवं श्रीकृष्ण रुपेण क्रीड़ते वेंकटाचले

धीर नीनहुदो जगदो दारनी नहुदो

बारी-वारिगे निन्न पाद सुवारिजंवाल सेरिद भक्तर

धोर दुरिवत दूरगैसुव मारजनक अपारमहिमने।।

(कवि कहते हैं - 'तुम धीर शूर हो स्वामी, तुम इस जगत के उद्धारक हो, सर्वकाल सर्वावस्थाओं में जो भक्त तेरे चरणों में आश्रय लेकर रहते हैं, उनके सारे पापों को धो ड़ालते हो हे मंमथ के जनक श्रीमन्नरायण स्वामी।')

धन्य नीनहुदो। सुरमुनि मान्य नीनहुदो।

पन्नगारि वाहन्न धरे थोलु इन्नु निनेगुदुर्यारुकाणेवो।

प्रपन्न नागेलो बिन्नहकेलु प्रपन्नवत्सल श्रीहयवदन।।''

(आप धन्यात्मा हो स्वामी! आप सुर-मुनियों से वंद्य हो। पन्नगारि यानी गरुड़ को वाहन बनाकर उड़नेवाले तुम्हारे आगे कौन ही अवरोध बनने का साहस कर सकता है? इसलिए मुझ शरणागत की दीन प्रार्थना को सुनकर मेरा उद्धार करो स्वामी।)

क्रमशः

(गतांक से)

सियाराम ही उपाय

शरणागति मीमांसा

(षष्टम खण्ड)

सियाराम ही उपेय

मूल लेखक
श्री सीतारामाचार्य स्वामीजी, अयोध्या

प्रेषक
दास कमलकिशोर हि. तापडिया
मोबाइल - ९४४९५१७८७९

१०७

श्रीमते रामानुजाय नमः

श्री देवराज गुरु कहते हैं कि इस श्लोक में इतर उपायों के द्वारा माया को तरना दुरत्यय बता दिये और अपनी शरणागति को अचूक उपाय बताये। और यह भी निर्णय कर दिए कि चाहे जैसा भी कोई क्यों न हो हमारी शरणागति किये बिना इस माया से पार हो ही नहीं सकता। पहले कह चुके हैं कि परमात्मा के अतिरिक्त सब देवों को माया बड़ी बुरी हालत से अपने झपटे में ले रखी है। जो स्वयं माया के फन्दे में पड़े हैं उनकी शरणागति से माया कैसे दूर हों सकेगी। जैसे किसी को भयंकर काल नाग काट लेता है तो जहर को उतारने के लिए जानकर लोग गरुड़ मन्त्र का प्रयोग करते हैं। क्यों कि गरुड़ से सर्प डरता है। गरुड़ मन्त्र के प्रयोग से जहर उतर भी जाता है। किन्तु गरुड़ मन्त्र का प्रयोग न करके बिष उतारने के लिए कोई मेंढ़क मन्त्र का प्रयोग करे तो उसका प्रयत्न निष्फल जाएगा। क्यों कि सर्प मेंढ़क को खा जाता है। सर्प के नाम से मेंढ़क थर-थर काँपता है। फिर मेंढ़क के मन्त्र से सर्प का जहर किस तरह से उतरेगा। इसी से श्रीमद्भागवत छठवाँ स्कन्ध २२ वां श्लोक में स्वयं देवताओं ने भगवान से प्रार्थना की है।

"अविस्मितंतं परिपूर्ण कामं स्वेनैव लाभेन समं प्रशान्तम्।
बिनोपसर्पत्यपरं हि बालिशः श्वलाङ्गुलेनातितितर्ति सिन्धुम्।।"

हे भगवान वासुदेव! आप सब प्रकार से परिपूर्ण हैं। माया से पार करने में आप ही समर्थ हैं। जो आप के श्री चरणों का सहारा छोड़कर देवों के द्वारा माया बन्धन से छूटना चाहते हैं वे ऐसे हैं जैसे कोई जहाज को त्याग कर कुत्ते की पूँछ पकड़ कर समुद्र को तरना चाहता हो।

सारांश कहने का यह हुआ कि एक भगवान के शरणागति अतिरिक्त सुगमता से माया बन्धन से छूटन के लिए कोई भी दूसरा अचूक उपाय नहीं है। "दैवी होषा" इस श्लोक में "मामेव" जो पद है उस से यह निर्णय होता है कि उपायान्तर त्याग किए बिना भगवान की शरणागति भी माया से नहीं तार सकेगी। "दैवी होषा" भगवान के इस श्रीमुख बचन से इस बात का निश्चय हुआ कि भगवान की शरणागति के बिना इस दुरत्यय माया को तरने के लिए सब के लायक और कोई भी सरल उपाय नहीं है।

दूसरी बात यह निकलती है कि श्री भगवान की शरणागति करने का जीव मात्र को अधिकार है। तीसरी बात यह निकली कि भगवान के शरणागत हुए बिना इतर उपायों से कोटि जन्म में भी कोई माया से पार नहीं हो सकेगा। चौथी बात यह है कि भगवान ही की शरणागति से माया छूट सकेगी। भगवान के सिवा इतर देवों की शरणागति करोड़ों जन्म में भी माया से कोई पार नहीं हो सकेगा। शरणागति का नायक एक श्री लक्ष्मीकान्त भगवान ही हैं। श्लोक में पांचवीं बात यह निश्चित हुई कि इतरावलम्ब त्यागपूर्वक ही भगवान की शरणागति, शरणागति शब्द से कही जाती है। भगवान के इस श्रीमुख वाणी से इस बात का स्पष्ट निर्णय हो गया कि दुरत्यय भगवान की माया तरने में वर्ण और आश्रम से कुछ भी सहयोग नहीं मिलता। चाहे कोई वर्ण हो, किसी आश्रम वाला हो। जिस को मायाकृत संसार बन्धन से छूटने की इच्छा होगी उसे भगवान की शरणागति करनी ही पड़ेगी। भगवान श्रीनिवास के श्री

चरणों में शरणागति किए बिना किसी देव के बल से या वर्ण के बल से आश्रम के बल से या साधन स्वरूप कर्मयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग के बल से करोड़ों जन्म में भी कोई इस माया बन्धन से नहीं छुटकारा पा सकेगा। भगवान की माया से तो तभी पार होगा जब कि त्राहि-त्राहि करके इतरावलम्ब त्यागपूर्वक भगवान की कृपा का अवलम्ब लेगा। जीवों में मिथ्या अहंकार घुसा है। अहंकार में पडके भगवत्कृपापात्र अनुभवी सद्गुरुओं के पास जाते नहीं अतः शास्त्रों के असली विषय का निर्णय होता नहीं। इससे यह जीव शरणागत वत्सल भगवान की शरणागत रक्षणरूप अचूक रीति को नहीं जान कर भगवान को छोड़ इतर साधनों में व्यर्थ पचि-पचि कर मरता है। दुनियाँ में ऐसा कौन अधिकारी है कि इतरावलम्ब छोड़कर भगवान की शरणागति कर लेने के बाद माया को नहीं तर सकता है, अर्थात् अवश्य तरेगा।

''जाने बिनु राम रीति पचि-पचि जग मरत।
परिहरि छल शरण गये तुलसिहुं ते तरत ।।''

ये हैं अनुभवी महात्माओं के शब्द। भले ही अनेक, इतर साधनों में व्यर्थ समय बिता करे परन्तु शास्त्रों का और बड़े-बड़े पहुँचे हुए महात्माओं का तो यह जोरों के साथ

कहना है कि एक भगवान श्री सीतारामजी बिना दूसरा कौन है कि इस दुरत्यय माया बन्धन से छुड़ाकर असीम सुख में पहुँचा सके बड़ों का वचन है कि-

सवैया :-

''जप योग बिराग महा मख साधन दान दया दम कोटि करै।
मुनि सिद्ध सुरेश महेश गणेश सुसेवत जन्म अनेक मरै।।
निगमागम वेद पुराण बढ़ै तपसानल में युग पुञ्ज जरै।
मन ते प्रण रोपि कहै तुलसी रघुनाथ बिना दुख कौन हरै।।

बस इस बात को हृदय में जाँच कर रहना और इसी पर परिस्थिति करके समय बिताना इसीका नाम भगवान की शरणागति है। भगवान की शरणागति में सब जीव मात्र का अधिकार है। शरणागति को फल प्राप्ति कहते हैं। जिस चीज में सब का अधिकार रहता है उस में देश, काल प्रकार का नियम नहीं रहता। भगवान सर्वत्र रहते हैं यह जीव चाहे जहाँ उनकी शरणागति कर सकता है। शरणागति करने में किसी देश का भी नियम नहीं है। २४ घण्टे में चाहे जिस समय अपने परम पिता परमात्मा की शरणागति कर सकते हैं। शरणागति में इस प्रकार का भी निया नहीं है। शुद्ध हालत में अथवा अशुद्ध हालत में जब भी संगति गल जाय उसी वक्त श्री भगवान के शरण हो सकते हैं। श्री विभिषणजी समुद्र तट पर बेसमय बिना प्रकार श्री भगवान की शरणागति किए थे। भारत में लिखा है कि दौपदी ने रजस्वला हालत में शरणागति करी थी। इसलिए भगवान की शरणागति करने में किसी देश काल प्रकार का नियम नहीं है और जहाँ शरणागति करने के लिए देश कालादि का नियम किया है वहाँ साधन प्रपत्ति वालों के लिए जानना चाहिए। अपने से कही हुई प्रपत्ति के बल से संसार बन्धन से छूटकर परमपद जाने की जो इच्छा करना है। इसी का नाम साधन प्रपत्ति है। यद्यपित साधन स्वरूप भक्तियोग से यह साधन प्रपत्ति कुछ सरल मालूम पड़ती है परन्तु इस साधन प्रपत्ति में भी अनेक झंझटें हैं। यह साधन प्रपत्ति भी अहंकार गर्भित होने के कारण साधन स्वरूप भक्तियोग के समान हो यहाँ से ले कर परलोक तक स्वरूप सुधारने में अनर्थ उत्पन्न करती है।

क्रमशः

गतांक से

श्री रामानुज नूट्रन्दादि

मूल - श्रीरंगामृत कवि विरचित

प्रेषक - श्री श्रीराम मालपाणी
मोबाइल - ९४०३७२७९२७

मत्तोरु पेरु मदियादु, अरंगन् मलरडिक्काळ्
उत्तवरे तनकुत्तवरा क्कोळ्ळु मुत्तमनै,
नत्तवर् पोत्तु मिरामानुजनै इन्नानिलत्ते
पेत्तनन्, पेत्तपिन् मत्तरिये नोरुपेदैमैये ॥५७॥

प्रयोजनान्तरवैमुख्येन श्रीरंगनाथपादाव्जप्रवणानेव स्वात्मबन्धुतया अध्यवस्यन्तम् उत्तमगुणाभिरामं महातपस्विसज्जनस्तूयमानं श्रीरामानुजमिह भूमौ लब्धवानस्मि। अतश्च विषयान्तरस्पृहाहेतु भूताज्ञानवैदेशिकोऽस्मि॥

प्रयोजनांतरों से विमुख होकर, श्रीरंगनाथ भगवान के पादारविंदों में प्रवण महात्माओं को ही अपने आत्मबंधु मानने वाले, अत्युत्तम कल्याण गुणवाले, और महातपस्वियों से संस्तुत श्रीरामानुजस्वामीजी को मैं ने इस भूतल पर ही पाया; ऐसे पाने के बाद मैं विषयांतर की इच्छा इत्यादि के हेतु किसी प्रकार का अज्ञान नहीं पाऊँगा ।

श्रीरामानुज स्वामीजी का आश्रय पाने के बाद विषयांतर की इच्छा नहीं करनी चाहिए।

क्रमशः

(गतांक से)

तिरुपति श्रीवेङ्कटेश्वर

(तिरुपति बालाजी)

हिन्दी अनुवाद - प्रो.यद्दनपूडि वेङ्कटरमण राव
प्रो.गोपाल शर्मा

अध्याय - २

श्वेतवराह कल्प की गाथा - I

(श्रीवराह स्वामी का पाताल से भूमि का उद्धार करना, और गरुड द्वारा क्रीडाद्रि को धरती पर लाना)

(यह गाथा वराह पुराण, भाग-1, अध्याय-1 तथा 3 में वर्णित है)

दो हजार *चतुर - युगों* के बीच (अर्थात् आठ हजार *युगों* के बीच के समय में) जो कि ब्रह्म के लिए एक दिन और एक रात का समय है, सूर्य भगवान ने अपनी तीक्षण किरणों द्वारा आग उगली थी। उस समय अनेकों अनेकों वर्षों तक वर्षाएँ भी नहीं हुई थीं। इस कारण से तापित और व्यथित साधुजन और *तपोधनों* ने, जिन्होंने अपनी तपस्या के बल पर आत्मानुभूति प्राप्त की थी, भूमाता के दुःख को दूर करने और *जनलोक* (सप्त लोकों में से एक, पृथ्वी) के रक्षार्थ ब्रह्मा के पास पहुँचकर प्रार्थनापूर्वक कहा कि जंगल और पर्वतमालाएँ प्रचंड अग्नि ज्वालाओं में जल कर राख हो गयी हैं। उस पर वायुदेव ने बहुवर्षों तक क्रुद्ध हो झंझाएँ चलायीं। घनघोर घटा समूह बने। मेघों ने मूसलाधार वर्षाएँ कीं। परिणामस्वरूप पृथ्वी पिघल कर पाताल में डूबी। इस स्थिति में पृथ्वीमाता एक हजार युग पर्यन्त रहीं। यह समय ब्रह्म के लिए एक रात का अंश था। युगों पर्यन्त का यह समय *प्रलयकल्प* था।

उस समय विष्णु, जो जीव तथा पदार्थों के सर्जक, संरक्षक और संहारक थे, एक वट पत्र पर शयन रत थे। उस समय *वटपत्रशायी* अपने आप में मग्न होकर पृथ्वी के पुनरुत्थान की सोच में लीन थे। पृथ्वी की रक्षा के ध्यान में थे। इस सोच को मन में रखकर वे *पाताल लोक* में पृथ्वी को ढूँढते पहुँचे। उस संदर्भ में उन्होंने भयंकर श्वेत वराह का रूप धारण किया था। उस वराह रूप में भगवान ने हिरण्याक्ष से भयंकर युद्ध किया। हिरण्याक्ष, उस समय नारकीय लोक के सम्राट थे। यही हिरण्याक्ष हिरण्यकशिप का भाई था। हिरण्याक्ष के पर्वताकार शरीर को श्वेतवराह अवतारी विष्णु ने अपने कठोर दंष्ट्रों से (नुकीले और तेज दांतों से) चीर दिया। राक्षस के रक्त से रंजित होकर सात समुद्र लाल लाल हो गये। श्वेत वराह ने अपार जल राशि से पृथ्वी माता को अपने दान्तों पर सुरक्षित रखकर आदिशेष के फणों पर रख दिया। फिर खडे रह गये। उस समय ऐसा

लगा कि वहाँ जनलोक का एक महापर्वत खडा है। विष्णु भगवान के कार्य से संतुष्ट होकर ब्रह्म, देवता समूह और महर्षि गण आदि ने *वेद मंत्रों* से श्वेत वराह अवतारी विष्णु भगवान का जय गान किया। सब ने पृथ्वी को पुनर्व्यवस्थित करने की बात उनके सामने रखी।

श्वेत वराह ने पृथ्वी की स्थापना की और *सप्त सागरों* की सीमा रेखाएँ बाँधी। इतना ही नहीं पूर्वस्थित *सप्तलोकों* की भी प्रतिष्ठा की। तब जाकर विष्णु ने ब्रह्म को बुलाकर आज्ञा दी कि वे पूर्ववत जगत की सृष्टि में लगें। तब से बहुत समय तक विष्णु भगवान ने पृथ्वी की रक्षा और जन रक्षा के लिए यहीं रहना चाहा। उस के लिए उन्होंने गरुड को वैकुण्ठ से *क्रीडाचल* को समस्त स्वार्गिक परिषद के साथ पृथ्वी पर लाने के लिए भी कहा। आज्ञा पाकर, गरुड वैकुण्ठ पहुँचे। तब समस्त *सुर समूह* विष्वक्सेन के नेतृत्व में पृथ्वी पर आया। विष्वक्सेन, वैकुण्ठ के रक्षक और विष्णु के सेनापति थे। इसी बीच वराह ने अपने वास के लिए उपयुक्त पवित्र क्षेत्र का भी चयन किया। यह क्षेत्र साठ *योजन* (600 मील) पर्यन्त विस्तृत था। गोमती नदी के दक्षिण में पूर्व सागर की पश्चिम दिशा में तथा रुक्मा - नदी की उत्तरी तट पर था। यह *पुण्य पुरुषों* के लिए उपर्युक्त वास स्थल भी बन गया।

गरुड ने प्राकृतिक वैभव से, ऊँची - ऊँची पर्वत शिखरों से शोभित क्रीडाचल को उस पवित्र क्षेत्र में बसाया। ये पर्वत शिखर सुवर्ण आभा से मण्डित और बहुमूल्य मणि - माणिक्यों से युक्त थे। ऐसा लगता था मानो *पंचोपनिषदों* का उज्ज्वल प्रकाश पुंज चमक रहा हो। उपनिषद देवता समूह उस क्षेत्र में बस गया। देवताओं के वास से पर्वत शिखरों की स्वर्णिम कांति और प्रबल हुई। उसी प्रान्त ने नारायणगिरि नाम से अभिहित होकर प्रसिद्धि प्राप्त की। नारायणाद्रि चौड़ाई में तीन *योजन* (तीस मील) और लंबाई में तीस *योजन* (300 मील) है। आकृति में आदि शेष सम है। पर्वत हरि के शंख के आकार में ढला है। यह क्षेत्र सभी प्राणियों के आवास के लिए उपयुक्त तथा पवित्र क्षेत्र बनकर ही रहा। समस्त मानव कोटि के लिए अपने को समर्पित करने योग्य बन गया। स्वरूप में अनुपम हो सभी

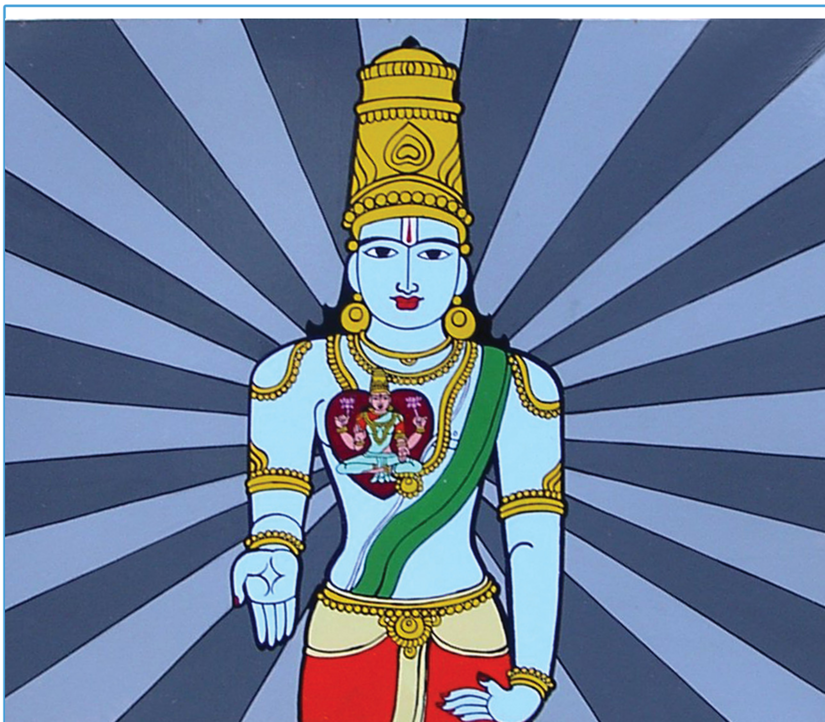

के लिए *मुक्ति* प्रदाता के रूप में विलसित हो गया। यह क्षेत्र आकस्मिक यात्रियों को भी मोक्ष प्रदान करता है।

श्वेत वराह ने नारायणाद्रि को अपने द्वारा चयनित क्षेत्र में स्थापित करने का आदेश दिया। ऐसा करने के पश्चात् वहाँ पवित्र विमान में (मंदिर के गर्भ गृह में) वे स्वयं विराजमान हो गये। मंदिर का विमान अनेक कलशों से शोभित और बहुमूल्य मणि - माणिक्यों से मण्डित हो दिव्य उज्ज्वल प्रकाश से विलसित है। अमूल्य मणियों से लसित *महामणि मंटप* का सौंदर्य अवर्णनीय और अनुपम है। उस से सटकर मंदिर की पूर्वदिशा में पवित्र वन के बीच *स्वामी पुष्करिणी* है। इसकी दक्षिण दिशा में देवाधिदेव कमलाक्ष विष्णु भगवान शंख, चक्र और गदा से विलसित हैं। उनके वक्षःस्थल के दक्षिण पार्श्व में श्रीलक्ष्मी ने भी विलसित होकर *दिव्य विमान* को अपना वास बनाने का निर्णय लिया।

ब्रह्म, देवता समूह, मुनि गण, सप्त ऋषि और अन्य भक्तों ने तब श्रीश्वेत वराह स्वामी से प्रार्थना की - ''हे भगवान! आपके भीकर दंष्ट्रों और वक्र विकराल भौंहों से तथा उज्ज्वल प्रखर अस्त्रों सम लटकती आपकी लटों से आपका स्वरूप अति भयंकर लग रहा है। देवताओं और भक्तों के संतोष के लिए आप सस्मित वदन हो विराजिएगा। ऐसे रूप में आप इस पर्वत पर ही रहिएगा। आपने मानवों और पवित्रात्माओं के वास के लिए पृथ्वी माता की रक्षा की है। इसलिए आप प्रशांत हो यहाँ रहिए। मानवों की रक्षा कीजिए। यहाँ से ही भक्तों की इच्छाओं की पूर्ति कीजिए। कामित वर प्रदान कीजिए। ध्यान योग और कर्म योग द्वारा आप को पाने में अशक्त जनों के लिए भक्ति ही एक मार्ग होता है न, प्रभु! उसी मार्ग पर चलकर वे सर्व सिद्धियाँ पा सकेंगे।''

सब की प्रार्थना सुनकर तुरन्त वराह स्वामी ने अपना विकराल रूप वर्जित किया। प्रशान्त रूप को स्वीकारा। उस स्थिति में वे चतुर्भुज और स्मित वदन से युक्त हुए। अनेक आभूषणों से लसित हुए। श्रीदेवी और भूदेवी संयुत हुए। तब उन्होंने विनम्र देवता समूह को संबोधित करके कहा - ''मैं इस वेङ्कटाद्रि को वैकुण्ठ से अधिक चाहता हूँ। मेरा निर्णय है कि मैं यहाँ श्रीदेवी और भूदेवी सहित रहकर भक्तों की कामनाएँ पूरी करूँ।'' भगवान ने देवताओं को अपने अपने वास स्थानों पर लौट जाने का आदेश दिया। तुरंत अन्तर्धान भी हो गये।

वैकुण्ठात् परमो ह्येषा वेङ्कटाख्यो नगोत्तमः।
अत्रैव निवसाम्ये श्री भूमि - सहितो ह्यहम्।। (श्लो - 12)

ददामि प्रार्थितान् अर्थान् मनुजेभ्यः सदा सुरान्।। (श्लो - 13)

(श्रीवाराह पुराण, भाग - 1, अध्याय - 35)

क्रमशः

आयुर्वेद के अनुसार दिनचर्या

- डॉ.सुमा एस.एस.जोशी
मोबैल : ९४४९५९५०४६.

****

आयुर्वेद भारत का प्राचीन चिकित्सा पद्धति है। आयुर्वेद में स्वस्थ पुरुष का स्वास्थ्य रक्षण और रोगों के चिकित्सा के बारे में बताया गया है। हमें स्वस्थ रहने के लिए हमारा दिनचर्या भी सही होना चाहिए। इस कोरोना के समय में हमारा दिनचर्या बहुत ही महत्वपूर्ण है। हमें स्वस्थ रखने के लिए आयुर्वेद में बताये गये दिनचर्या का वर्णन निम्नांकित है।

(१) ब्रह्मी मुहूर्ते उत्तिष्ठे

आचार्यों ने बताया है कि स्वस्थ व्यक्ति को ब्रह्म मुहूर्त में उठना चाहिए। आयुर्वेद के अनुसार रात्रि के अन्तिम पहर मतलब सूर्योदय से पहले के २ घण्टा और ३६ निमिष को ब्रह्म मुहूर्त माना जाता है। कहा जाता है कि उस काल में उठने से बुद्धि, बल, सौंदर्य और स्वास्थ प्राप्त होते है। इस समय के दौरान वातावरण में प्रदूषण की मात्रा न्यूनतम होती है और शुद्ध होता है। ब्रह्म मुहूर्त को अध्ययन करने के लिए उत्तम समय माना गया है। इस समय में व्यायाम करने से आम्लजनक की मात्रा शरीर को अच्छे से मिलेगी।

(२) दन्त धावन

मुख पाचन मंत्र का सब से पहला अवयव है। इसीलिए मुख और दन्तों का स्वच्छ रखना अनिवार्य है। दन्तों की सफाई तुरे, तीखे और कडवे स्वाद में प्रधान दातुन से करनी चाहिए। बरगद, नीम, करञ्ज आदि से दातुन किये जा सकते हैं। आयुर्वेद के अनुसार दातुन १२ अंगुली होनी चाहिए। दातुन के अगले हिस्से को दान्तों से चबाकर ब्रश की तरह बना देना चाहिए और उस से मसोड़ों को हानि न हो उस तरह से दान्तों को साफ करना चाहिए। त्रिकटु लम्बी मिर्च और काली मिर्च दालचीनी इलाइची, तेजपत्ता और तोजोवती के पावडर को शहद और सैन्धव नमक के साथ मिलाकर दातुन के साथ उपयोग करना चाहिए। दातुन का उपयोग करके उसे फेंक देना चाहिए। और हमेशा नये दातुन से ही दान्त साफ करना चाहिए। दन्तधावन से जीभ तथा दान्तों की गन्दी बदबू, नीरसता तथा गन्दगी छुटकारा मिलता है। और मुँह में ताजगी आती है। जिन्हें खाने में रुचि न लगती हो उनको दिन में दो बार दातुन करने की सलाह दी जाती है। इस के अलवा कुछ विशिष्ट दातुन से दान्त साफ करने से कुछ विशिष्ट लाभ होते हैं जैसे की आम के पेड की टहनी से दातुन करने से स्वास्थ्य बढोतरी होती है।

(३) अञ्जन क्रिया

बेहतर दृष्टि के लिए अञ्जनक्रिया को दिनचर्या में समाहित किया गया है। अञ्जन (काजल) आयुर्वेदिक औषधियों से बनाया गया। यह गाढा होता है नेत्ररोगों की चिकित्सा के लिए भी अञ्जन किया का प्रयोग किया जाता है। आयुर्वेद में नेत्र को तेज/रोशनी का स्थान माना गया है जिस को श्लेष्म/कफ से खतरा होता है। इसीलिए आँखों की अग्नि को श्लेष/कफ से बचाने के लिए अञ्जन का प्रयोग दिनचर्या में बताया गया है। काजल ना केवल दृष्टि को बढाता है पर आँखों का सौन्दर्य भी बढाता है। बाल्यावस्था में शरीर में कफरोष प्रबल होता है। इसलिए बच्चों में अञ्जन करने का महत्व अधिकतम होता है।

सौवीराञ्जन : प्रतिदिन प्रयोग करना चाहिए। इस से आँखों की रोशनी प्रज्वलित होती है एवं आँखों की बीमारियों का संभावना कम हो जाती है।

रसाञ्जन : इसे सप्तह में एक बार प्रयोग करना चाहिए। दारुहरिद्रा तथा गाय के दूध से बनाया जाता है। यह मोतियाबिन्द में भी असर कारक है।

(४) नस्म

यहाँ पर औषध द्रव्य को नाक में डाला जाता है। इसे सीधे लेटकर करना चाहिए। दिनचर्या में सामान्यत अणुतैल का प्रयोग किया जाता है। दायें और बायें तरफ १ से दो बून्दे डालना चाहिए। बाद में उस द्रव्य को मुहँ से भूँकना चाहिए। इस से हमारे भुजाओं को ऊपर के अंग (जैसे आंख, कान, नाक, बाल) स्वस्थ रहते हैं। इसे अञ्जन क्रिया के बाद करना चाहिए।

(५) गण्डूष / कवलग्रह

इसे सामान्यत नस्म के बाद करना उचित है। गण्डूष में शरीर में तापमान के समान तैल को मुहँ में भरना है। जब तक हमारे मुँह में थकान महसूस होती है तब तक भरना है और रखना है उसके बाद थूँकना है। वहीं कवलग्रह में कुल्ला करना है। तैल के बदले गरम पानी का प्रयोग कर सकते है। इस से हमारे चहरे की त्वचा की कांती बढती है और चहरे की मांसपेसियाँ अच्छी होती हैं।

(६) धूमपान

यहाँ पर औषधीय द्रव्यों का धूम प्रयोग में लाया जाता है। यहाँ पर तम्बाकू का प्रयोग नहीं किया जाता है। इसे तीन-तीन संख्याओं में नाक और मुहँ से लिया जाता है। इस से लिप्त कफ दोष कम होता है, दान्त-मसूडे-सभी इन्द्रियाँ स्वस्थ रहती हैं।

(७) ताम्बूल सेवन

आयुर्वेद में ताम्बूल सेवन का अलग महत्व है। यहाँ पर भी तम्बाकू प्रयोग नहीं किया जाता है।

(८) अभ्यंग / तेलमालिश

औषधीय तेलमालिश करने से शरीर में वात दोष का शमन होता है। अभ्यंग को खास करके कान मस्तिष्क और पैरों पर अच्छो से करना चाहिए। इस को दिनचर्या में समावेश करने से निम्न कई फायदे होते हैं। (१) विलाम्बित वृद्धावस्था, (२) वातदोष का शमन, (३) बेहतर दृष्टि की प्राप्ति, (४) शरीर के धातुओं को पोषण, (५) अच्छी नीन्द, (६) रक्त प्रवाह अच्छी होती है, (७) त्वचा में निखार, (८) माँसंपेशिओं का पोषण.

(९) व्यायाम

प्रतिदिन व्यायाम करने से शरीर में हल्कापन एवं ताजगी का अनुभव होता है। यह नियमित रूप से व्यायाम करने से शरीर में से अतिरिक्त चरबी का भी नाश होता है एवं रक्तसंचार बढता है। ऐसा कहा जाता है कि जब तक ललाट से स्वेद आता है तब तक व्यायाम करना चाहिए।

(१०) उद्वर्तन

उद्वर्तन पाउडर मालिश है। यहाँ पर सुगंधित एवं औषधीय द्रव्यों के पाउडर का लेप बनाकर शरीर पर मालिश करते है जिस से शरीर से दुर्गन्ध दूर होती है और आच्छी सुगन्ध की वजह से मन प्रसन्न होता है। इसे उबटन भी कहते हैं। इसी से कफ का शमन होता है, चरबी कम होती है, त्वचा मुलायम एवं चमकदार होती है, शरीर में स्थिरता आती है, सौंदर्य प्रदान होता है।

११) स्नान

रोगों से दूर रहने के लिए स्वच्छता अत्यावश्यक है। स्नान करने से शरीर भिन्न प्रकार की बाहरी अशुद्धियों से मुक्त होता है। आयुर्वेद में स्नान करने के कई फायदे बताये गये है जैसे की

(१) दुर्गन्ध दुर होती है। (२) पाचनक्रिया की उत्पत्ति होती है। (३) खुजली कम या नहीं होती है। (४) बल बढता है। (५) थकान कम होती है। (६) रक्त का शोधन होता है। (७) शरीर शुद्ध होता है। आयुर्वेद के अनुसार कन्धों के नीचे गरम पानी और सिर पर ठण्डे पानी का प्रयोग करना चाहिए। सिर पर गरम पानी डालने से दृष्टि का बल एवं बालों का घटाव होता है।

इसके बाद आहार सेवन, सद्व्रत पालन, दिन का कार्य, निद्रा बाकी सभी समाहित होते हैं। व्यक्ति के अनुसार से अलग भी होते हैं। यहाँ पर सामान्यत दिनचर्या होनेवाली बातें बताई गयी है। व्यक्ति विशेष पर यह निर्भर करता है। इस में जो भी बताई गयी हैं वह जानकारी के लिए है। इस में कोई भी सन्देह हो तो अपने आयुर्वेद के डाक्टर से सलाह लेना उचित है। उदाहरण के तौर पर नस्म करने की विधी कैसी होनी चाहिए कब नहीं करनी चाहिए। ये सभी बातें महत्व रखती हैं। स्वस्थ रहें और अपने स्वास्थ्य को बनायें रखें।

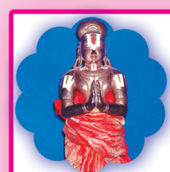

(गतांक से)

मंगलाशासन पाशुरम

पोय्गैयाल्वार रचित मंगलाशासन पाशुरम

तमिल मूल - श्री टी.के.वि.एन. सुदर्शनाचार्या

हिन्दी अनुवाद - श्री के.रामनाथन
मोबाइल - ९४४३३२२२०२

मंगलाशासन का अर्थ आशीर्वाद देना है। आशीर्वाद तो अपने से छोटों को दिया जाता है। भगवान तो सब से श्रेष्ठ है, पर भक्त लोग अत्यधिक भक्ति में लीन होकर उनका मंगलाशासन करते हैं। देखा जाता है कि असीमित प्रेम एवं भक्ति से प्रेरित होकर भक्तलोग कहते हैं, जय हो श्री सीताराम भगवान का, मंगल हो श्री लक्ष्मीनारायण भगवान का इसलिए मंगलाशासन करना अत्यधिक भक्ति को प्रकट करने का एक ढंग है।

भगवान विष्णु के मन्दिरों तथा उनकी कीर्ति को मंगल शब्दों से गाए गए पद्य ही मंगलाशासन पासुरम कहा जाता है। अनेक आळ्वारों ने मंगलाशासन पासुरम की रचना की है। उन में नम्माळ्वार के पासुरम प्रमुख स्थान पाता हैं। तिरुविरुत्तम्, तिरुवासिरियम्. पेरिय तिरुवन्दाति, तिरुवाय् मोळि आदि उन से रचित चार पद्य संग्रह हैं। ये चार रचनाएँ ऋग, यजुर, साम, अथर्वण वेदों के बराबर माने जाते हैं। इसलिए भक्त कवि नम्माळ्वार को भक्त समाज वेदों को तमिळ् में दिये महान के नाम से गौरव देकर बुलाता है। भक्त आळ्वार नम्माळ्वार को षठकोपन्, परांगुसन्, वगुळापरणर् के नाम से भी बुलाते हैं।

अतिसुन्दर रूपी भगवान

अण्णल मायन अणिकोळ् सेन्तामरै
कण्णन सेंकनिवाय करुमाणिक्कम्
तेण्णिरै सुनैनीर् तिरुवेंगटत्तु
एण्णिल तोल्पुगळ् वानवरीसने (२९२१)

शब्दार्थ - मायन - आश्चर्यपूर्ण गुणवाले, सेन्तामरै - लाल कमल, सेंकनिवाय - लाल होंठवाले मुँह, करुमाणिक्कम् - नीले रंग के रत्न, सुनै नीर् - श्रोत जल, तोल्पुगळ् - अत्यधिक कीर्ति

भावार्थ - तिरुवेंकट पर्वत की अपनी अलग विशेषता है। यहाँ एक ओर प्रकृति की सुन्दरता भरी है तो दूसरी ओर भगवान विष्णु की आध्यात्मिक ज्योति की चमक प्रकाशमान है। सोने में सुगंध की तरह इस स्थान में प्राकृतिक सुन्दरता के बीच भगवान विष्णु विराजित हैं।

अनेक भक्त कवियों ने अपनी कविता में तिरुवेंकट पर्वत की महिमा एवं विशेषता को मनमोहक ढंग से प्रकट करके भक्ति भावना को उत्तेजित किया है। उन्होंने अपनी कविता में तिरुवेंकट गिरि में विराजित भगवान विष्णु की लीला और भक्तों के प्रति उनकी दया आदि के बारे में भी सुन्दर ढंग से व्यक्त किया है। उनको पढ कर भक्त जन आत्म विभोर हुए बिना नहीं रहेंगे।

भक्त कवि नम्माळवार जो आळवारों के श्रेष्ठ गुरु माने जाते हैं, वे पर्वत की सुन्दरता को गाने के साथ साथ भगवान विष्णु के मनोहर रूप का भी सरस शब्दों से गाते हैं। वे सोचते हैं कि भगवान विष्णु विराजित इस पर्वत की प्राकृतिक सुन्दरता के साथ उनका सुन्दर रूप

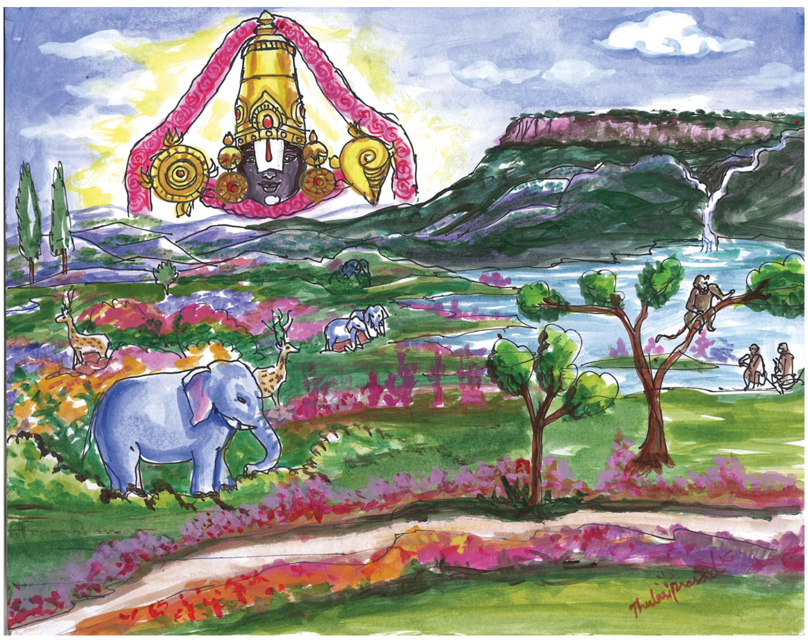

भी मन से हटता नहीं। वे गाते हैं, ''प्रकृति की सुन्दरता से भरपूर तिरुवेंकट पर्वत पर ठंडे पानी से बहते स्त्रोत अधिक हैं। ऐसे मनोहर पर्वत पर भगवान विष्णु विराजित हैं। वे बडे कीर्तिवान हैं। वे उत्तम गुणों से ऊँचे कार्य करने वाले हैं। विकसित लाल कमल की तरह उनकी लाल आँखें तो इतना सुन्दर है। उनकी लाल होंठ मीठे फल के बराबर हैं। उनका शरीर चमकते काले रत्न के बराबर नीले रंग में है। उनकी कीर्ति की कोई सीमा नहीं है। वे नित्यसूरी कहे जाने वाले देवगणों के नेता हैं।''

इसका मतलब यह है कि यह पर्वत तो हरा भरा है। इस के दो कारण हैं। एक तो इस पर्वत से बहते अनेक ठंडे स्त्रोत हैं और दूसरा यहाँ बडे शान से विराजित भगवान विष्णु जो अपने पास आने वाले भक्तों को अपने सुन्दर रूप का दर्शन देकर उन पर कृपा बरसाते हैं। इसलिए हम यहाँ आकर पवित्र स्त्रोत में स्नान करके पर्वत की रमणीयता का अनुभव करेंगे और भगवान विष्णु के सुन्दर रूप का दर्शन करके उनकी कृपा का पात्र बनेंगे।

महा कृपा करने वाले भगवान

ईसन् वानवर्क्कु एन्बन् एन्राल अदु

तेसमो तिरुवेंगटत्तनुक्कु

नीसनेन् निरैवु ओंड्रम् इलेन - एन् कण्

पासम् वैत्त परञ्चुडर जोदिक्के (२९२२)

शब्दार्थ - नीसनेन् - नीच माने जाने वाले,
एन् कण् - मुझ पर,
पासम् - कृपा,
परञ्चुडर - महान ज्योति

भावार्थ - भक्ति के नौ अंग होते हैं। उन में दास्य भाव भी एक है। भक्त अपने को भगवान का दास मानकर उनकी सेवा करना अत्यंत श्रेष्ठ कार्य समझता है। तब वह अपने को नीच एवं क्षुद्र समझकर भगवान को उत्तम और श्रेष्ठ मानकर उनकी उपासना करता है। हम ऐसे भाव को अनेक भक्त कवियों में पाते हैं। इस से यह प्रकट होता है कि भगवान के सामने हमें कभी भी अहंकार या घमंड को दिखाना नहीं चाहिए। क्यों कि इस संसार में उन से श्रेष्ठ कोई नहीं है। कवि का विचार है कि भगवान खुद कीर्तिवान हैं। हम उनकी कीर्ति को शब्दों से गाते हैं। हमारे ऐसे कार्य से भगवान की कीर्ति में वृद्धि तो नहीं होगी। क्यों कि हम तो उनके सामने नीच और क्षुद्र हैं। ऐसी दशा में हमारे शब्दों से उनका यश तो बढेगा नहीं।

भक्त कवि नम्माळ्वार महान कीर्तिवान भगवान विष्णु के सामने अपने को गुणहीन और नीच समझते हैं। उनका विचार है कि भगवान की कीर्ति को शब्दों में वर्णित नहीं कर सकते। वे तो वर्णन से परे हैं। वे सोचते हैं कि नीच मेरे कथन से उनकी कीर्ति नहीं बढेगी। फिर भी मेरा मन उनकी महिमा को गाना चाहता है।

वे गाते हैं, ''मैं तो नीच हूँ और मुझ में कोई ऐसा उत्तम गुण भी नहीं है। फिर भी श्रेष्ठ ज्योति माने जानेवाले प्रकाशरूपी भगवान विष्णु ने मुझ पर कृपा की है। ऐसे भगवान की कीर्ति गाकर मैं कहूँगा कि वे देवरगणों के नेता है। नीच मेरे ऐसे कथन से भगवान विष्णु को ऐसी कोई श्रेष्ठता तो नहीं होगी। फिर भी वे मुझ पर अपनी कृपा दिखाते हैं।''

मतलब यह है कि मैं तो साधारण दास और क्षुद्र हूँ। मेरे वास्ते भगवान को कभी महानता नहीं मिलेगी। परंतु उनकी उपासना करना हमारा कर्तव्य है। नीच या क्षुद्र होने पर भी सब को समान दृष्टि से देखने वाले भगवान विष्णु हम पर दया दिखाये बिना नहीं रहेंगे।

क्रमशः

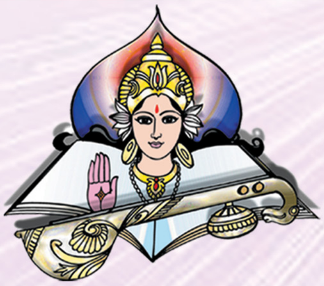

आइये, संस्कृत सीखेंगे..!!

लेखक - महामहोपाध्याय काशिकृष्णाचार्य

आयोजक - महामहोपाध्याय समुद्राल लक्ष्मणय्या

हिन्दी में निर्वहण - डॉ.सी.आदिलक्ष्मी

मोबाइल - ९९४९८७२१४९

सप्तमः पाठः - सातवाँ पाठ

ये = जो लोग	अन्ये = दूसरों	स्वे = स्वयं
किम् = क्या	अपि = भी	अनेकत्र = कई स्थलों में
स्यात् = हो सकता है	स्याः = तू (हो सकता)	स्याम् = हम बन जाएगा

प्रश्न :

१. अन्ये अपि तत्र न सन्ति।
२. ते तत्रासन् वा?
३. किं वा?
४. अद्य एकः अपि तत्र नास्ति।
५. अहम् अपि तत्र स्याम्।
६. त्वं श्वः अनेकत्र स्याः।
७. यूयं तत्र न आस्त किं वा?
८. ह्यः अत्र त्वम् अपि नासीः।
९. श्वः प्रभृति अहमपि तत्र स्याम्।
१०. ते स्वे तत्र तदा आसन्, इदानीं न सन्ति।

प्रश्न :

१. दूसरों भी वहाँ नहीं हैं।
२. क्या वे वहाँ हैं।
३. वैसे भी?
४. आज कोई भी वहाँ नहीं है।
५. मैं भी वहाँ रहूँगा।
६. तू कल कई स्थलों में रहोगे।
७. क्या तुम वहाँ नहीं थे?
८. कल तुम भी यहाँ नहीं थे।
९. कल से मैं भी वहाँ रहूँगा।
१०. वे स्वयं तब वहाँ थे अब नहीं हैं।

जवाब :

१. आप भी वहाँ नहीं हैं।
२. जो कल वहाँ थे,
वे आज नहीं हैं।
३. शायद आज वहाँ नहीं होगा?
४. प्रातः से ही तू वहाँ रहना है।
५. हम आज यहाँ नहीं रहेंगे।
६. तुम आज यहाँ नहीं रहोगे।
७. वे कौन हैं?
८. वहाँ दूसरे लोग बहुत से थे।
९. क्या मालूम मुझे कहाँ रहना है?
१०. वे सभी आज यहाँ नहीं हैं।

जवाब :

१. ते स्वे अपि तत्र नासन्।
२. ह्यः तत्र ये आसन्,
ते इदानीं न सन्ति।
३. अद्य सः तत्र नास्ति किम्?
४. प्रातः प्रभृति त्वं तत्र स्याः।
५. वयम् अद्य कुत्रापि न आस्म।
६.यूयम् अद्य अत्र न स्थ।
७. ते के!
८. तत्र अन्ये अपि बहवः आसन्।
९. किं वा अहं कुत्र स्याम्?
१०. ते सर्वे अत्र अद्य न सन्ति।

स्वास्थ्य का रहस्य

- श्रीमती सी मंजुला
मोबाइल - ९९६६९१३८४४४

बहुत पहले समय की बात है, अजयमेरु गाँव में विक्रम नाम का एक वृद्ध आदमी रहता था। उसकी उम्र पचहत्तर साल से भी ऊपर थी पर वह चालीस साल के व्यक्ति से भी स्वस्थ लगता था।

लोग बार-बार उस से उसकी सेहत का रहस्य जानना चाहने पर वह कभी कुछ नहीं बोलता था। एक दिन राजा को भी उस के बारे में पता चला और वे भी उसकी सेहत का रहस्य जानने के लिए उत्सुक हो गए। लेकिन उनको भी अपने आरोग्य का रहस्य न बताया।

राजा ने अपने गुप्तचरों से विक्रम पर नजर रखने को कहा। गुप्तचर भेष बदलकर उस पर दृष्टि रखने लगे। अगले दिन उन्होंने देखा कि विक्रम प्रातः काल उठकर कहीं जा रहा है, वे भी उनके पीछे लग गए। विक्रम तेजी से चलता जा रहा था, मीलों चलने के बाद वह एक पहाड़ी पर चढने लगा और अचानक ही गुप्तचरों की नजरों से गायब हो गया। गुप्तचर वही रुक कर उसका इंतजार करने लगे। कुछ देर बाद वह लौटा, उस ने मुट्ठी में कुछ छोटे-छोटे फल पकड रखे थे और उन्हें खाता हुआ चला जा रहा था। गुप्तचरों ने अंदाजा लगाया कि हो न हो, विक्रम इन्हीं रहस्यमयी फलों को खाकर इतना स्वस्थ है।

अगले दिन दरबार में उन्होंने राजा को सारी कहानी सुनायी। राजा ने उस पहाडी पर जाकर, उन फलों के बारे में पता लगाने का आदेश दिया, पर बहुत छान-बीन करने के बाद भी कोई ऐसा असाधारण फल वहाँ नहीं दिखाई पडा। अंततः थका-हारकर राजा ने विक्रम को दरबार में हाजिर करने का हुक्म दिया।

राजा विक्रम से पूछा कि इस उम्र में भी तुम्हारी इतनी अच्छी सेहत देखकर हम प्रसन्न है, बताओ, तुम्हारा स्वास्थ्य का रहस्य क्या है। विक्रम कुछ देर तक सोचता रहा और फिर बोला कि ''महाराज, मैं रोज पहाडी पर जाकर एक रहस्यमयी फल खाता हूँ, वही मेरी सेहत का रहस्य है।'' ठीक है चलो हमें भी वहाँ लेकर जाओ और दिखाओ वह कौन-सा फल है?

अगले दिन सभी लोग पडाड़ी की ओर चल दिए, वहाँ पहुँचकर विक्रम उन्हें एक बेर के पेड़ के पास ले गया और उसके फलों को दिखाते हुए बोला, ''हुजूर, यही वे फल है जिसे मैं हर दिन खाता हूँ।'' राजा क्रोधित होते हुए बोले, ''तुम हमें मूर्ख समझते हो, यह फल हर दिन हजारों लोग खाते रहते हैं, पर सभी तुम्हारी तरह सेहतमंद क्यों नहीं है।'' विक्रम विनम्रता से बोला, ''महाराज, हर रोज हजारों लोग जो फल खाते हैं, वह बेर का फल होता है, पर मैं जो

फल खाता हूँ वह सिर्फ बेर का फल नहीं होता ... वह मेरी मेहनत का फल होता है। इसे खाने के लिए मैं रोज सुबह १० मील पैदल चलता हूँ जिस से मेरे शरीर की अच्छी वर्जिश हो जाती है और सुबह की स्वच्छ हवा मेरे लिए जडी-बूटियों का काम करती है। बस यही मेरा स्वास्थ्या का रहस्य है।''

राजा विक्रम की बात समझ चुके थे, उन्होंने विक्रम को ५० स्वर्ण मुद्राएँ देकर सम्मानित किया और अपनी प्रजा को भी शारीरिक श्रम करने की नसीहत दी।

बच्चो! आजकल तकनीकी ने हमारी जिन्दगी को बिल्कुल आसान बना दी है, पहले हमें छोटे-बडे सभी कार्यों के लिए घर से बाहर निकलना पड़ता था, पर आज हम इंटरनेट के माध्यम से घर बैठे-बैठे ही सारे काम कर लेते हैं। ऐसे में जो थोड़ा बहुत शारीरिक गतिविधि के मौके होते थे वे भी खत्म होते जा रहे हैं और इसका असर हमारी सेहत पर भी साफ देखा जा सकता है। बचपन से ही स्वास्थ्य पर ध्यान रखना बहुत जरूरी है। इस से भविष्य में आनेवाली जटिल बीमारियों के बारे में घबराने की जरूरत नहीं होगी।

नीतिः

घूमना शारीरिक की एक गतिविधि है। इस को अपनाना हमारा परम कर्तव्य है। पुराने जमाने बुजुर्ग लोग अक्सर कहते थे - ''आरोग्य ही महाभाग्य है''।

तिरुमल में दर्शनीय क्षेत्र

स्वामिपुष्करिणी : मंदिर के निकट स्थित यह तालाब अतिपवित्र है। यात्री मंदिर में प्रवेश करने के पूर्व इसमें स्नान करते हैं। आत्मा व शरीर की शुद्धि के लिए यहाँ स्नान करना श्रेष्ठ है।

आकाश गंगा : मंदिर की उत्तरी दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

पापविनाशनम् : मंदिर की उत्तरी दिशा में ५ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

वैकुंठ तीर्थ : मंदिर की ईशान दिशा में लगभग ३ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

तुम्बुरु तीर्थ : मंदिर की उत्तरी दिशा में १६ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

भूगर्भ तोरण (शिलातोरण) : यह अपूर्व भूगर्भ शिलातोरण मंदिर की उत्तरी दिशा में १ कि.मी. दूरी पर स्थित है।

ति.ति.दे. बगीचे : देवस्थान के आध्वर्य में सुंदर व आकर्षक बगीचे लगे हुए हैं, जिन में विशिष्ट पेड व पौधे मिलते हैं।

आस्थान मंडप (सदस हाल) : यहाँ धर्म प्रचार परिषद् के आध्वर्य में धार्मिक कार्यक्रम मनाया जाते हैं। जैसे भाषण, संगीत-गोष्ठी, हरिकथा-गान एवं भजन।

श्री वेंकटेश्वर ध्यान ज्ञान मंदिर (एस.वी. म्यूजियम्) : इस कलात्मक सुंदर भवन में एक म्यूजियम्, ध्यान केंद्र तथा छायाचित्र-प्रदर्शिनी आयोजित है।

ध्यान केंद्र : तिरुमल के एस.वी. म्यूजियम् एवं वैभवोत्सव मंडप में स्थित ध्यान केंद्रों में भगवान पर ध्यान केंद्रित कर भक्त शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

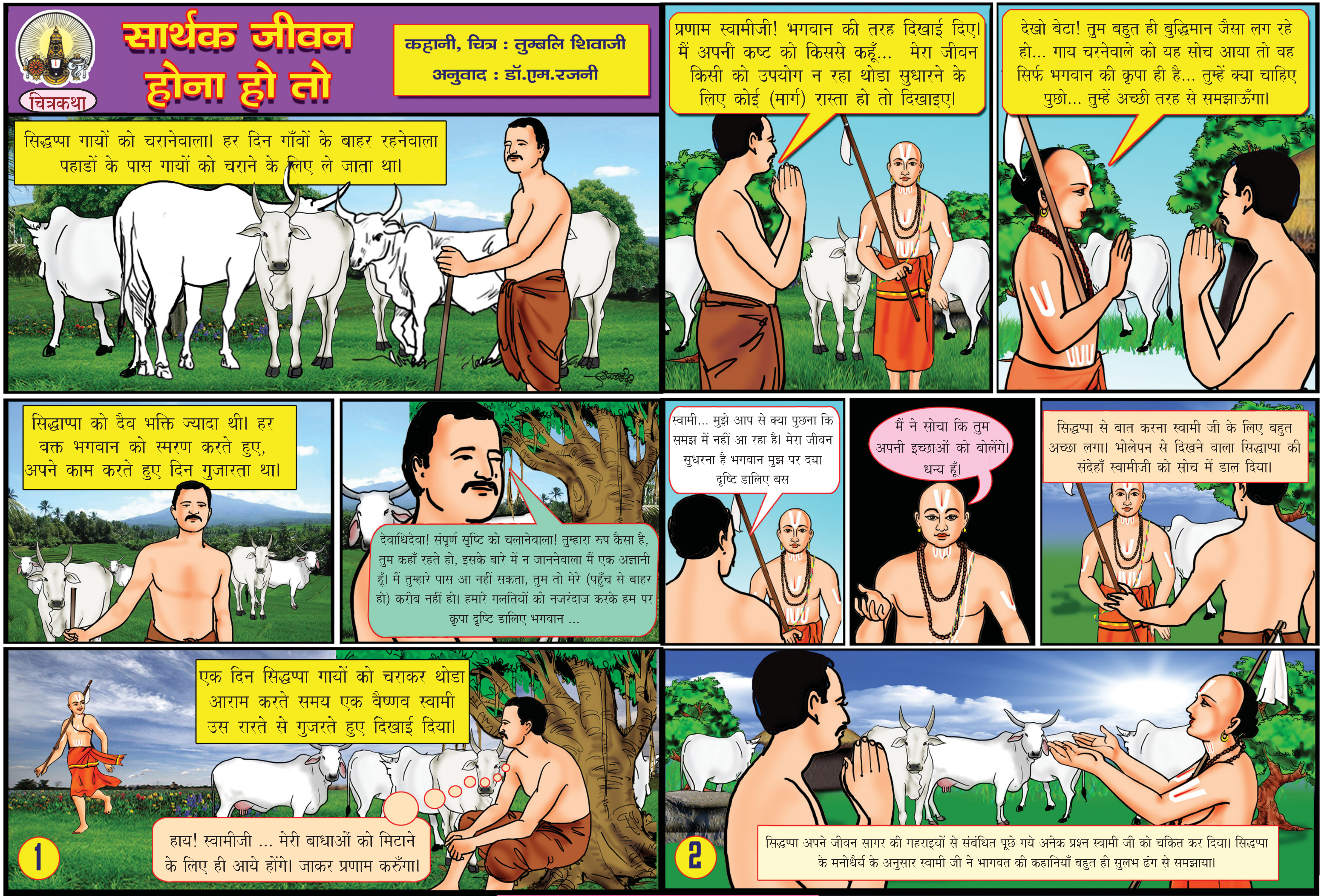
चित्रकथा
सार्थक जीवन होना हो तो
कहानी, चित्र : तुम्बलि शिवाजी
अनुवाद : डॉ.एम.रजनी
सिद्धप्पा गायों को चरानेवाला। हर दिन गाँवों के बाहर रहनेवाला पहाडों के पास गायों को चराने के लिए ले जाता था।
सिद्धाप्पा को दैव भक्ति ज्यादा थी। हर वक्त भगवान को स्मरण करते हुए, अपने काम करते हुए दिन गुजारता था।
देवाधिदेवा! संपूर्ण सृष्टि को चलानेवाला! तुम्हारा रुप कैसा है, तुम कहाँ रहते हो, इसके बारे में न जाननेवाला मैं एक अज्ञानी हूँ। मैं तुम्हारे पास आ नहीं सकता, तुम तो मेरे (पहुँच से बाहर हो) करीब नहीं हो। हमारे गलतियों को नजरंदाज करके हम पर कृपा दृष्टि डालिए भगवान ...
एक दिन सिद्धप्पा गायों को चराकर थोडा आराम करते समय एक वैष्णव स्वामी उस रास्ते से गुजरते हुए दिखाई दिया।
हाय! स्वामीजी ... मेरी बाधाओं को मिटाने के लिए ही आये होंगे। जाकर प्रणाम करुँगा।
1
प्रणाम स्वामीजी! भगवान की तरह दिखाई दिए। मैं अपनी कष्ट को किससे कहूँ... मेरा जीवन किसी को उपयोग न रहा थोडा सुधारने के लिए कोई (मार्ग) रास्ता हो तो दिखाइए।
देखो बेटा! तुम बहुत ही बुद्धिमान जैसा लग रहे हो... गाय चरनेवाले को यह सोच आया तो वह सिर्फ भगवान की कृपा ही है... तुम्हें क्या चाहिए पुछो... तुम्हें अच्छी तरह से समझाऊँगा।
स्वामी... मुझे आप से क्या पुछना कि समझ में नहीं आ रहा है। मेरा जीवन सुधरना है भगवान मुझ पर दया दृष्टि डालिए बस
मैं ने सोचा कि तुम अपनी इच्छाओं को बोलेंगे। धन्य हूँ।
सिद्धप्पा से बात करना स्वामी जी के लिए बहुत अच्छा लगा। भोलेपन से दिखने वाला सिद्धाप्पा की संदेहाँ स्वामीजी को सोच में डाल दिया।
सिद्धप्पा अपने जीवन सागर की गहराइयों से संबंधित पूछे गये अनेक प्रश्न स्वामी जी को चकित कर दिया। सिद्धप्पा के मनोधैर्य के अनुसार स्वामी जी ने भागवत की कहानियाँ बहुत ही सुलभ ढंग से समझाया।
2

वैष्णव स्वामी के द्वारा सुना गया भागवत की कहानियाँ सिद्धप्पा को अलग दुनियाँ में ले गया। आँखें बंद करना और खोलने से हमेशा वही याद आ रहा है।
श्री कृष्ण लीलाएँ हर पल याद आती थी। सबेरे नींद उठे जब से उनका दिनचर्या भगवान की यादों से गुजरता था।
प्रणाण स्वामी! मुझे आप ही बचाइए।
बेटा! क्या हुआ। क्यों इतने बेचैन से दिखाई देते हो, दरअसल बात क्या है बोलो...
मुझे हमेशा वह भगवान ही दिखाई दे रहे हैं। कुछ आपत्ती है जैसा मेरा मन को लगता है। मैं ने गलती क्या किया, फिर बार-बार भगवान (प्रत्यक्ष) प्रकट होकर मेरे कामों में अडचन पैदा कर रहे हो; ऐसा मेहसूस होता है। मेरे अपने सभी काम मैं खुद न करते हुए, वह भगवान ही संपूर्ण काम किया जैसा भ्रांति हो रहा है... मुझे मालुम नहीं है कि वह सही है या गलत है।
भगवान! यह क्या माया
परमात्मा! मैं एक न लायक मैं तुम्हारी लीलाओं को किस मुहँ से तारीफ करूँ...
स्वामीजी की बातों सुनकर हर दिन हर पल भगवान को याद कर रहा हूँ.. फिर भी रात और दिन में बार बार मुझे दर्शन देकर मेरे .. कामो में बाधा डाल रहे हैं? ऐसा क्यों चल रहा है क्या मैं कुछ गलती किया?... जाने, अनजाने में कुछ किया हूँ तो, भगवान मुझ पर नाराज होंगे तो मेरी क्या हालत है...? आज जैसे भी हो स्वामी जी को जरूर पूछना..
3
बेटा तुम बहुत ही भाग्यवान हो! तुम भगवत सिद्धि पाकर अपना नाम सार्थक बनालिया।
स्वामी! मुझे कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है। क्या मुझे इतना भाग्य प्राप्त होगा?
हाँ बोटा! तेरा ही भाग्य है... हर आदमी अपने कामों को खुद करते हुए, हर काम को भगवदर्पण की दृष्टि से करना चाहिए। तभी उसका जीवन जिंदगी सार्थक बनेगा। हर वक्त, हर पल भगवत्‌नामस्मरण करते हुए, किसी को नुकसान न पहुँचा कर, आस-पास के लोगों की मदद करते हुए जिस दिन जीवन चलाएगा वही माधव सेवा होगा।
4
वैष्णव स्वामी से ज्ञान प्राप्ति पाकर सिद्धप्पा अपने जीवन को परोपकारी बुद्धि से आगे बढाया।
स्वस्ति।

'क्विज'

आयोजक - डॉ.दिव्या.एन

१) ताल्लपाका अन्नमाचार्य का जन्म किस जिला में हुआ था?
अ) चित्तूर आ) कडपा इ) नेल्लूर ई) अनंतपूर

२) राक्षस राजा हिरण्यकश्यपु किस भगवान से द्वेष करते थे।
अ) विष्णु आ) ईश्वर इ) गणेश ई) राम

३) भक्ति कितने प्रकार की होती है?
अ) दस आ) ग्यारह इ) नौ ई) सात

४) मातृश्री तरिगोंडा वेंगमांबा का अन्नदान कहाँ है?
अ) तिरुपति आ) काणिपाकम इ) पाकाला ई) तिरुमला

५) अक्षयतृतीया के दिन लोग किस चीज को खरीदते है?
अ) सोना आ) चाँदी इ) हीरा ई) मोती

६) भगवान के दसवतारों में चौथा अवतार कौन सा है?
अ) परशुराम आ) कूर्मावतार इ) वरहावतार ई) नरसिंहावतार

७) भारत में प्रस्तुत कोरोना के कितने वैक्सीन मौजूद है?
अ) चार आ) दो इ) छः ई) आठ

जवाब
१) आ २) अ ३) इ ४) ई ५) अ ६) ई ७) आ

चित्रलेखन

इस चित्र को रंगों से अब भरें क्या?

बाजु में सूचित चित्र को नीचे के डिब्बों में खींचिये -

Edited and Published on behalf of T.T.Devasthanams by **Prof.K.Rajagopalan,** Ph.D., Chief Editor, T.T.D. and Printed at T.T.D. Press by **Sri P.Ramaraju,** M.A., Special Officer (Press & Publications), T.T.D. Press, Tirupati-517 507.

ति.ति.दे. ने २१-०४-२०२१ को घोषित किया कि हनुमान जी का जन्मस्थल तिरुमला ही है

१३-०४-२०२१ को महतिकलाक्षेत्र (तिरुपति) में ति.ति.देवस्थान की ओर से आयोजित प्लव नाम संवत्सर उगादि पर्व का दृश्य

१८-०४-२०२१ को श्री रामानुजाचार्य जी का १००५ वाँ अवतारमहोत्सव के संदर्भ में तिरुमल श्री पेद्दजीयर जी के मठ में संपन्न हुआ श्री रामानुजनूट्रन्दादी दिव्यप्रबंध पारायण महोत्सव का दृश्य।

१३-०४-२०२१ को तिरुमल श्रीवारी मंदिर में उगादि आस्थान के बाद श्री वैखानस आगमशास्त्र ग्रन्थों का आविष्कार दृश्य।

०१-०५-२०२१ को तिरुमल में कार्य निर्वहण करनेवाले सफाई कर्मचारियों को हेल्तकिटों (आरोग्यकिटों) को देते हुए ति.ति.देवस्थान के अध्यक्ष श्री वै.वि.सुब्बारेड्डी जी।

विनरो भाग्यमु विष्णु कथा...!!